क्या मैं तुम्हें एक अच्छी किताब दूं ?
शौकिया पुस्तक कर्मियों के लिए एक किताब

उषा राव
टी. विजयेन्द्र
शैलजा कल्ले

प्रकाशक समूह

◆ मंचि पुस्तकम, हैदराबाद ◆ बाल साहित्य भंडार, चौरई
◆ रूपान्तर, रायपुर ◆ शिशु मिलाप, वडोदरा
◆ साहित्य चयन, नई दिल्ली ◆ बाल साहिति, चंडीगढ
◆ रोशनाई प्रकाशन, कांचरापाडा ◆ जीवन मांगल्य, कौसानी

सितंबर 2003

Kya Main Tumhe Ek Achchi Kitab Dun?
Shaukia Pustak Karmiyon Ke Liye Ek Kitab
Shall I Give You a Good Book?
A Book for Amateur Book Activists
A book in Hindi by Usha Rao, T. Vijayendra and Shailaja Kalle

प्रकाशन वर्ष सितंबर 2003
मूल्य रू. 25.00
© कापी लेफ्ट

प्रकाशक समूह

1. मंचि पुस्तकम द्वारा वासन, 12-13-452 स्ट्रीट नं 1, तारनाका, सिकंदराबाद आन्ध्र प्रदेश 500017. टेलि. 040 - 27015295/6.
2. बाल साहित्य भंडार, चौरई, पोस्ट बरगीनगर, जिला जबलपुर 482056 मध्य प्रदेश.
3. रूपान्तर, ए 26, सूर्या अपार्टमेंट, कटोरा तालाब, रायपुर 492001, छत्तीसगढ. टेलि. 0771-2424669.
4. शिशु मिलाप, 1, श्रीहरि अपार्टमेंट, एक्सप्रेस होटल के पीछे, अलकापुरी, वडोदरा 390007 गुजरात. टेलि.0265-2342539.
5. साहित्य चयन, 91, एल.आई.जी., हस्ताल, उत्तमनगर, नई दिल्ली 110059. टेलि. 011-25633254.
6. बाल साहिति द्वारा वालंटरी हेल्थ एसोसिएशन आफ पंजाब, एस.सी.एफ. 18/1, सेक्टर 10- डी चंडीगढ 160011. टेलि. 0172-543557.
7. रोशनाई प्रकाशन, 212 सी.एल/ए, अशोक मित्र रोड (सरकस मैदान के पास) कांचरापाडा, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल.
8. जीवन मांगल्य, टेलिफोन एस्चेंज के पास, कौसानी, जिला अल्मोडा 263639, उत्तराखंड.

कंपोजिंग पद्माशेखर
पेज मेकिंग रवि
मुद्रक चरिता ग्राफिक्स, आल्वाल, सिकंदराबाद.

विषय सूची

1. अपनी बात 2
2. शौकिया किताबों की दुकान 5
3. जनता के बीच पुस्तकालय कैसे चलायें 33
4. पुस्तक सूचियां 59

अपनी बात

बाघ ने पूछा, 'आदमी बार बार पानी क्यों पीता है?'
जवाब मिला,'क्योंकि वह एक दुखी जीव है.'

यह दुखी जीव और भी ऐसे कई 'फालतू' काम करता है. कविता लिखता है, कहानी लिखता है, यहां तक कि उपन्यास भी लिख बैठता है! और मुझ जैसा दुखी जीव जो यह सब नही कर सकता है, वह इन्हे पढता है, अपने मित्रों को पढाता है, पुस्तकों का आदान-प्रदान करता है. आगे चलकर वह पुस्तकालय चलाता है, किताबों की दुकान भी चलाता है और दूसरे लोगों को ऐसा करने के लिए उकसाता है.

यह सब मैं पिछले 40 से अधिक वर्षों से करता आ रहा हूं. शुरु शुरू में मैं अपने आपको साहित्य कर्मी कहता था. लेकिन साहित्य काफी बडी चीज है. उसमें प्रतिभा और साधना की जरुरत होती है.

कीचड में रहकर
उससे अपना दामन बचाकर
अपने सौन्दर्य से जगत को मुग्ध कर दे
कमल जैसी प्रतिभा हममें कहां?

अतल तल में बैठकर
सिकता कण को उर में रखकर
मोती जो उसे बना दे
सीपी जैसी साधना हममे कहां?

मैं जो करता आ रहा हूं वह मुझे बहुत साधारण लगता है. ऐसा, जो कोई भी पुस्तक प्रेमी आसानी से कर सकता है और कई ऐसा करते भी हैं.

इसलिए मैने 'शौकिया पुस्तक कर्मी' शब्द चुना. यह एक ऐसा व्यक्ति होता है जो अपने समय एवं सुविधा के अनुसार अपने मित्रों तक अच्छी किताबे पहुंचाता है. यह काम वह एक शौकिया किताबों की दुकान और/या एक शौकिया पुस्तकालय के माध्यम से करता है.

करीब 13 वर्ष पहले उषा राव मेरे साथ जुट गई. उसकी लगन और लोगों को जोडने की क्षमता मुझसे कहीं ज्यादा है और हम लोगों ने मिलकर कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और मध्यप्रदेश में कई पुस्तकालय चलाये/चलवाये और किताबों की दुकाने चलाई. उषा का और परिचय इस किताब के पृष्टों में मिलेगा.

मध्यप्रदेश में उषा के साथ शैलजा आ मिलि. शैलजा अपनी धुन की पक्की है. गांव गांव घूमकर और लोगों के साथ, खास कर महिलाओं और किशोरियों के साथ दोस्ती बैठाने की उसकी अद्‌भुत क्षमता है. नागपुर, जबलपुर और बरगी बांध के आसपास के गांवो में पुस्तक प्रदर्शनिया उसी के कारण संभव हुई. चौरई गांव के महिला अड्‌डा का पुस्तकालय भी उसने शुरु करवाया.

इस काम में हमे कई लोग मिले जिन्होंने हमारा उत्साह बढाया और कईयों ने इस तरह के काम चलाये. उन्ही में से कुछ लोग इस प्रकाशक समूह में हमारे साथ हैं. हिन्दी में इतने सारे (8) ग्रुपों का मिलकर एक किताब छापना भी शायद एक नई घटना है. यह इस किताब की विषय वस्तु के अनुरुप है. ये सारे ग्रुप किसी न किसी रुप में पुस्तक कर्मी हैं. दूसरे, हमारा पाठक समूह एक बडे भूभाग में एक पतली परत के रुप में फैला है. वह महंगी किताब खरीद नही सकता. उस तक पहुंचने का यह एक व्यवहारिक तरीका है. और आखिर में, आज जहां पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर दोनो ही बदनाम हैं इस तरह के पीपल्स सेक्टर की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है. खासकर यदि यह एक स्वतंत्र लोगों का स्वतंत्र समूह (a free association of free people) हो.

किताब तीन भागों में बंटी है. हर भाग अपने आप में संपूर्ण है और

अलग से पढा जा सकता है. इसके चलते कुछ बातें दोहराई गई हैं.

भाग -1 शौकिया किताबों की दुकान

भाग -2 जनता के बीच पुस्तकालय कैसे चलायें

भाग -3 पुस्तक सूचियां - पाठकवार और विषयवार सूची, प्रकाशकवार सूची, प्रकाशकों के पते. सूचियां इस तरह बनाई गई हैं कि पुस्तकों का वर्गीकरण भी हो जाता है जो पुस्ताकलय चलाने में सहायक होता है.

इस किताब का कापी राईट नहीं बल्कि कापी लेफ्ट है, यानी आप इसे या इसके किसी भी अंश को इसी रुप में या इसके संशोधित या संवर्धित रुप में छाप सकते हैं. हमे सचमुच बहुत खुशी होगी यदि आप में से कोई भी इस काम को अपनी रुचि और प्रवृति के हिसाब से आगे बढाये.

हममें से कोई भी हिन्दी भाषी नहीं है, न ही किसी ने हिन्दी में हाई स्कूल के बाद पढाई की है. स्वाभाविक है कई अशुद्धियां और वर्तनी के दोष रहेंगे. किताब भी हैदराबाद में छप रही है. उसकी अपनी सीमाएं हैं. इस सबके बावजूद किताब छापने का हमने दुस्साहस किया है. आशा है कि किताब की विषयवस्तु इन दोषों से ज्यादा महत्वपूर्ण साबित होगी.

अलियाबाद 20.6.2003 टी. विजयेन्द्र

भाग - 1

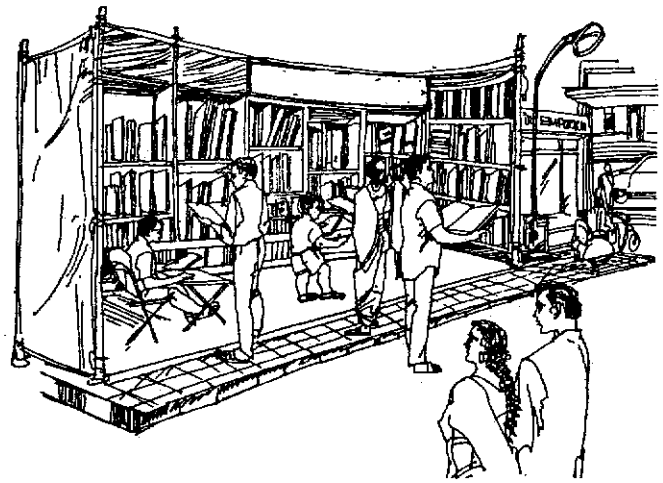

शौकिया किताबों की दुकान

विषय सूची

1.	नाम - ठिकाना - पता - ठप्पा	9
2.	प्रकाशकों के पते	10
3.	शुरुआती लागत	11
4.	दुकान के नाम बैंक में बचत खाता	11
5.	किताबों की जानकारी	11
6.	प्रकाशकों को पहली चिट्ठी	15
7.	जाती डाक का लेखा-जोखा	17
8.	प्रकाशन सूचियों का रखखाव और आती चिट्ठियों की फाईल	17
9.	दुकान का हिसाब	18
10.	किताबें खरीदने के लिए लागत	22
11.	किन लोगों के लिए या किस पाठक वर्ग के लिए किताबें रखेंगे	22
12.	किताबें मंगाना	23
13.	पार्सल उठाना	25
14.	पार्सल जांचना, किताबें जमाना	26
15.	किताबें बेचना	28

आप भी शौकिया तौर पर एक किताबों की दुकान चला सकते हैं

क्या किताबों की दुकान चलाना भी एक शौक हो सकता है?

हां जरुर!

यह शौक दो अर्थों में हैं. एक, हम वो काम करें जिसमें हमें मजा आता है. दूसरा, हम इसे अपने खाली समय में कर सकते हैं. जब जितना बनता है उतना ही काम लेकर आगे बढा सकते हैं. अगर हम इसे ठीक तरह से करें तो शुरु में रु. 500/- की पूंजी लगाकर हम इसे आगे बिना और पैसे लगाये चला सकते हैं.

किताबों की दुकान चलाने के मजे - इससे हमें बहुत सारी किताबे देखने - पढने को मिलती हैं. इसके द्वारा हम नये दोस्त बना सकते हैं. बहुत सारे लोगों में पुस्तकें पढने की चाह होती है और ज्यदातर जगहों में सही किताबें मिलती नहीं है. सही किताब मिलने पर लोग बहुत ही खुश होते हैं. ऐसा जब होता है तब बहुत ही अच्छा लगता है.

मैं यह काम कई सालों से कर रही हूं और मुझे लगता है कि यह शौक आप भी पाल सकते हैं.

मैंने अपनी दो सहेलियों को किताब की दुकान कैसे चलाये इस बारे में एक लंबी चिट्ठी लिखी थी. आपको वो चिट्ठी दिखाऊं?

प्यारी दमयन्ती और श्यामा,

पिछली बार जब मिले थे तब हमने स्कूलों में पुस्तक प्रदर्शनियां लगाने की बात की थी. इससे बस्ती के बच्चों और बडों को बहुत तरह की किताबें देखने को तो मिलेगी. साथ में किताबें बेचेंगे भी. कोई चाहे तो किताबें खरीद सकते है. ऐसी प्रदर्शनियां लगाने के लिए हमें पहले से ही किताबें खरीदकर इकट्ठे कर लेना होगा.

आमतौर पर नवंबर 14 से 20 तक पुस्तक सप्ताह मनाया जाता. इस दौरान पुस्तक प्रदर्शनी और पुस्तकों से जुडे और तरह के अनेकों कार्यक्रम किये जाते हैं. मैं सोच रही थी कि हम भी इसी समय के आस-पास अपने पुस्तक प्रदर्शनियों की शुरुआत करें तो अच्छी शुरुआत होगी. इस महीने में स्कूल की पढाई का दबाव बहुत ज्यादा नहीं होता और मौसम भी अनुकूल रहता है.

लेकिन बात यह है कि फिर अपने को किताबें इकट्ठे करने का काम अभी से शुरु कर देना पडेगा. अभी शुरु करने से ही प्रदर्शनी तक पर्याप्त अच्छी किताबें जुटा पायेंगे. इस में समय लगता है क्योंकि प्रकाशकों को पहली चिट्ठी लिखकर पुस्तक-सूचियां मंगायेंगे. फिर दूसरी बार में, अपने को जो किताबें चाहिये उनकी सूची और उसके लिए लगने वाले पैसे बैंक से डी.डी. बनवाकर फिर चिट्ठी भेजेंगे. तब कहीं डाक या ट्रांसपोर्ट से प्रकाशक किताबें भेजेंगे. उसके बाद हमें पार्सल खोलकर, किताबों का हिसाब देखकर उन्हें जमाना होगा. तब कहीं प्रदर्शनी के लिए हमारी तैयारी पूरी होगी. इस सारे काम में, क्योंकि दो बार चिट्ठियों को जाना है और उनके जवाब आते हैं, लगभग दो-ढाई महीने आराम से लग जाते हैं. इसलिए तुरन्त काम शुरु कर देना है.

तो हो जाएं शुरु!

1. नाम - ठिकाना - पता - ठप्पा

इसमें सबसे पहला काम-अपने दुकान का नाम तय करना. हमारी पहचान कुछ कुछ 'उमंग किशोरी पुस्तकालय' के नाम से बनी है और ये प्रदर्शनियां भी उसी से जुडी हैं. मेरा सुझाव है कि 'उमंग किताब घर' या 'उमंग पुस्तक भण्डार' या ऐसा कोई नाम हो.

अब ये भी तय करना है कि हमें चिट्ठियां व किताबें किस पते पर आने से सुविधा होगी. ऐसी जगह चुनें जहां किताबों को संभालकर रख पायें और उसे संभालने वाली कोई जिम्मेदार लडकी/महिला हो. फिर पता लिखें - पिन कोड के साथ और स्पष्ट. एक बार उस इलाके के डाकिये से भी मिल कर बता देना कि इस पते की चिट्ठियां यहां पर देनी है. जब पता बिलकुल स्पष्ट हो जाये तो अपने दुकान के नाम और पते का एक सुन्दर ठप्पा बनवाना. ठप्पा बन जाये तो अपनी दुकान शुरु.

अपने काम आनेवाली स्टेशनरी की सूची

फाइलें

1. आती चिट्ठियों वाली फाइल
2. हिसाब की फाइल
3. बिल, इन्वाइस् , रसीद...फाइल

कापियां

1.	प्रकाशकों के पते वाली कापी	40 पन्ने
2.	जाती डाक वाली कापी	80 या 100 पन्ने
3.	हिसाब की कापी	200 पन्ने
4.	किताबों की जानकारी वाली कापी	200 पन्ने
5.	डुप्लिकेट कापी ऋ४ नाप की	100 पन्ने
6.	स्टाक रजिस्टर की कापी	200 पन्ने

अन्य सामग्री

1.	कार्बन	2 शीट
2.	पंच	1
3.	स्टेप्लर	1
4.	स्टेप्लर पिन	1 पेकेट
5.	स्केल	1
6.	ठप्पा और स्टेंप पैड	
7.	बोरा सीने वाली सुई	
8.	बिल पुस्तक	

2. प्रकाशकों के पते

दूसरा काम है प्रकाशकों के पते इकट्ठा करना. इसके लिए एक चालीस पन्ने की कापी या अड्रेस डायरी अलग बनाना. शुरुआत के लिए कुछ पते मैं भेज रही हूं (भाग - 3 पुस्तक सूचियां) उन्हें नोट कर लेना. अब से जब भी किताबें दिखे उन्हें ध्यान से देखना. कोई अच्छी लगे तो तुरंत उसके प्रकाशक का पता नोट कर लेना - फिर दुकान की पते वाली डायरी में उतार लेना. नई नई किताबों का हमें पता चले इसके लिए हमें नियमित रुप से पुस्तक की बडी दुकानों पर, अपने इलाके के अच्छे पुस्तकालयों में जाकर किताबें देखते रहना पडेगा. शहर में कोई पुस्तक मेला लगे तो उसमे जाना होगा. ऐसे जगहों में ही हमें बहुत सारी किताबें देखने को मिलेंगी. किताबों के बारे में हमारी जानकारी बढाना - इस बारे में आगे और बाते होंगी. अब इतना कि अच्छी किताबों के प्रकाशकों के नाम और पते इकट्ठे करना और प्रकाशकों के पते वाली डायरी में नये
नाम जोडते जाना.

3. शुरुआती लागत

प्रारंभिक खर्चे के लिए कम से कम तीन सौ रुपये इकट्ठे करना है. ये रुपये कहां से आयेंगे? अपने सभी साथी इसमें थोडा थोडा हाथ बटायें तो अच्छा. फिर अपनी बस्ती के लोगों से बातचीत कर उन से भी कुछ रकम अपने पुस्तक प्रदर्शनी के काम के लिए दान मांगकर जमा करें तो बडी अच्छी बात होगी. ये काम हम बहुत लोगों की मदद लेकर ही कर सकते हैं.

4. दुकान के नाम बैंक में बचत खाता

अपने दुकान के दो लोगों को चुनना जो पैसों की सारी जिम्मेदारी ले सकें. फिर पास के बैंक में दुकान के नाम से एक साझा बचत खाता खोलना. खाता ऐसा हो कि दो में से एक जने हस्ताक्षर करके पैसे निकाल पाये.

5. किताबों की जानकारी

लोगों तक किताबें पहुंचाने के इस काम को अच्छी तरह करने के लिए हमें किताबों के बारे में जानकारी होना बहुत जरुरी है. इसलिए अगले दो महीनों के अन्दर ही कोशिश करनी चाहिए कि हम ज्यादा से ज्यादा किताबें पढ लें. हर एक किताब पढने के तुरन्त बाद अपनी कापी में उस किताब के बारे में 2-4 लाइने लिख लें - किताब में क्या है, कैसी है, क्या वह छोटे बच्चों को पसन्द आयेगी या 10 साल से ऊपर के बच्चों के लिए या अपने उम्र की लडकियों के लिए. हमारी जानकारी इतनी पक्की हो जानी चाहिए कि कोई भी हमारे पास आये तो उनकी जरुरत और पसन्द जानकर हम उन्हे सही किताब दिखा सके और उन्हे लगे अरे यही किताब तो चाहिए थी!

किताबों के बारे में अपनी जानकारी बढाना हमारे काम का सबसे

महत्वपूर्ण हिस्सा है. इसी पर से लोग हमारे पास आयेंगे और हम उन्हें सही किताब दे सकेंगे. हो सकता है कि हमारी बिक्री बढेगी - अच्छी तरह से ये काम हो तो शायद हमारा गुजारा भी इसी से निकल आये.

चलो इसी बात पर - एक बहुत ही सुन्दर किस्सा है, 'किताबों से गुजारा' - हंगेरी के जामी का, जितने भी बार पढ लूं दुबारा पढने का मन करता है. दूं तुम्हें पढने के लिए? तो पहले पढ लो, उसके बाद काम कुछ आगे बढायेंगे.

किताबों से गुजारा

इमरे और जामी दो लडके हैं बहुत समय बाद मिलते हैं. ये तब की बात है...

'लेकिन तू गुम कैसे हुआ? अपने घरवालो से कैसे बिछडा?' इमरे हठात पूछ बैठा. जामी ने - 'मैं घर से भागा था' ऐसा छोटा सा जवाब देकर उस सवाल को बैठाल दिया. लेकिन अगला सवाल ज्यादा मुश्किल था. दो साल वह क्या करता रहा? रोजी रोटी के लिए उसने क्या किया था? जिंदगी में पहली बार इमरे ने पाया कि जामी ... कोई और होता तो बात अलग थी, कि जामी बोलना नहीं चाहता. इमरे ने कई बार सवाल दोहराया. काफी पीछे पडा, तब कहीं जाकर जामी ने मुंह खोला.

'मैं ... मैंने ये दो साल गुजारे' आखिरकर जामी बोला, - 'किताबों से'.

'किताबें!' इमरे के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा. जामी और किताबें ऐसे जन्मजात दुश्मन थे जैसे आग और पानी! कैसे कर ये दोनों साथ हो लिये - ये तो पता लगाने लायक बात थी.

'किताबें ... लेकिन तू किताबों से कैसे गुजारा करता था?'

'वो तो बहुत आसान था, उन्हे बेचकर.'

'तेरा मतलब तू किताबें खरीदता बेचता था?'

'ऐसे ही कुछ ... जो भी हो उन्हें बेचता था.'

'लेकिन - तुझे किताबें मिली कैसे?'

'...मैं उनके लिए भीख मांगता था.'

ये तो उसने बहुत ही अजीब बात कही थी. रात के अधुरे उजाले में जामी के चेहरे पर पडती फीकि चांदनी से उसकी बात और भी अजीब लग रही थी. इमरे बस अवाक् रहा.

'किताबें?'

'हां किताबें!'

आखिरकर जामी को ही महसुस हुआ कि बात को समझाकर बताना ही पडेगा.

'ये सब ऐसे हुआ', उसने धीरे से बोलना शुरु किया.

'मैंने ना पहले कुछ खाने के लिए भीख मांगने की कोशिश की. लेकिन खाना मांग नहीं सका. मैं कोशिश करता लेकिन बोल नही पाता. बोल मुंह से बस नही ही निकलते. मैं उन्हें अपने मुंह के अंदर महसूस करता. मुझे रोटी दो - बस इन शब्दों का ही एक स्वाद था, मानों वो शब्द ही बिलकुल रोटी जैसे हो. तुम ये बात नहीं मानोगे, लेकिन ये सच है, वो चबाई हुई रोटी जैसे थे - मानो मेरे गले में चिपके हुए हों... और बाहर नहीं निकल पा रहे हों...'

'तुमने क्या किया?'

'मैं एक घर के बाद दूसरे घर पर कोशिश करता - फिर - 'कितने बजे हैं' पूछकर, उन्हें धन्यवाद कहकर आगे निकल पडता. बार बार ऐसे ही होता फिर मैंने उनके घरों में जाना छोड दिया. मैं रास्ते से लगे हुए पेडों से फल तोडकर खाता. कुछ दिन तो ऐसे ही काटे. फिर जब और रहा न गया तो मैं एक बडे घर पर गया ... तुम्हें यकीन नहीं होगा कि जब तुम मांगने जाते हो तो वे तुम्हें किस तरह देखते हैं... खासकर जब तुम्हारे पास बदले में देने को कुछ नहीं है. उससे पहले मैंने चेहरे पर कभी भी उस तरह

का भाव नहीं देखा था. खैर... वो ऐसे शुरु हुआ. मैंने देखा चारो तरफ किताबे बिखरी पडी हैं... कुर्सियों पर, मेजों पर, फर्श पर भी, देखने से ही लगता था कि यहां किताबें प्यार मुहोब्बत की पात्र नहीं थी - वे चाही गयी नहीं थी, वो किताबें. नहीं तो वे तख्तों पर जमायी जाती, सफाई से रखी जाती... यह देखकर ही मुझे एक बात सूझी. मैंने कहा मैं एक विद्यार्थी हूं, बहुत गरीब हूं और मैं किताबे चाहता हूं - कोई भी किताबें. इतिहास की, साहित्य या स्कूल की किताबें ...सातवीं से ऊपर की. वे ही मेरे उमर के हिसाब से सही थे और उसके अलावा उनके पास ऐसी ही किताबें हो सकती थी. और वे मुझे वे किताबें दे देते थे. हर घर से मुझे किताबें मिली. वो मुझे खाना नहीं देते थे. लोग किताबें दे देना ज्यादा पसंद करते हैं. उन्हें अपना पेट अपने दिमाग से ज्यादा प्यारा है. और अगर तुम कहो कि तुम्हारा दिमाग ही भूखा है, तो वो ज्यादा दोस्ती से पेश आते हैं. खासकर अगर ये बात जाहिर करके उनका खाना न बिगाडो - कि उन्होंने तुम्हें छोडकर खाया है...कि एक साथी इन्सान भूखा मर रहा है...'

वो दो लडके अपने कपडों में और सिमटकर बैठे. उन्हें ठण्ड लग रही थी.

'मैंने वो पहली किताबें अगले शहर में बेच दी, उनके नाम भी नहीं देखे - बस सबसे पहले जो किताब की दुकान पडी वहीं जाकर कहा कि इन्हें बेचना है. फिर उस शहर में मैंने फिर किताबें मांगी... उस बार एक दो लाइन पढी. बाद में मैं पूरे पन्ने पढ लेता. फिर पूरी कहानी. रोचक लगी तो बेचने से पहले पूरी किताब पढ डालता. कुछ किताबें ऐसी थी - मुझे इतनी अच्छी लगी थी कि उन्हें बेचने पर दिल टूटा जाता. लेकिन वे भारी थे और धन्धा अच्छा तो चलने लगा था, फिर भी मैं भूखा था. इसलिए मैं कोई किताब रख नहीं पाता. बस पढ भर लेता.'

वह कुछ अचकचाते हुए हंसा.

'ट्रकों में मुफ्त की सवारी करते हुए पढता. और चलते चलते भी... इन

दो सालों में मैंने सैकडों किताबें पढी है. सब चलते हुए. मेरे ख्याल में दुनिया में बहुत सारे लोग होंगे जो मेरे मुकाबले ज्यादा तेज पढ लेते हों - लेकिन चलते हुए नहीं. अगर चलते हुए पढनेवालों की कोई होड लगती तो मै जरुर अव्वल निकलता.'

'...हुं, तुम जरुर अव्वल आते.'

Martin Munkasci द्वारा लिखित
'Fool's Apprentice' का एक अंश

6. प्रकाशकों को पहली चिट्ठी

अपने पुस्तक की दुकान की एक व्यापारिक इकाई के रुप मे पहचान बनाते हुए, और प्रकाशकों से उनकी पुस्तक सूची और व्यापारिक नियम की जानकारी पानेके लिए प्रकाशकों को पहली चिट्ठी भेजते हैं. हर प्रकाशक को (जो हमने प्रकाशकों के पते वाली डायरी में नोट किये हैं) कुछ इस तरह की चिट्ठी पोस्ट कार्ड पर लिखकर भेजना है. हम आठ - दस जने मिलकर हर कोई पोस्ट कार्ड लिख डालें तो काम जल्दी हो जायेगा. लिखावट एकदम साफ और सुन्दर हो. ठप्पा अपने दुकान का लगाना. चिट्ठी क्रमांक क्रम से लगाते जाना. दिनांक जिस दिन चिट्ठी भेजोगे उस दिन का लिखना. चिट्ठी डाक, में डालने के लिए ले जाने से पहले अपनी जाती डाक वाली कापी में दर्ज करना.

चिट्ठयां जाने और फिर जवाब आने में समय लगता है. इसीलिए प्रकाशकों को पहली चिट्ठी अगस्त अंत तक जरुर भेज देनी चाहिए.

प्रकाशकों को पहली चिट्ठी

चिट्ठी क्रमांक
20.8.99

प्रति - राजकमल प्रकाशन
दिल्ली

प्रिय महोदय/महोदया

हम जबलपुर के स्कूलों में प्रदर्शनियां लगाकर पुस्तकें बेचने और ऐसा करते हुए ज्यादा लोगों तक किताबें पहुंचाने की तैयारी में हैं. आपके प्रकाशन की किताबें स्टाक में रखना चाहते हैं. आपकी पुस्तक सूची और व्यापारिक नियम की जानकारी भेजें. उमंग किशोरी पुस्तकालय से जुडी हुई हम पहली बार इस तरह का काम करने जा रहीं है. आशा है कि आप अधिकतम छूट देकर इस काम में हमें सहयोग देंगे.

पुस्तक सूची और व्यापारिक नियम की जानकारी जल्द ही भेजें.

इन्तजार में,

आपकी आभारी,

(श्यामा)

राजकमल प्रकाशन,
1-बी नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली - 2
पिन - 110 002.

7. जाती डाक का लेखा-जोखा

अपने दुकान का डाक खर्च और जाती चिट्ठयों का लेखा जोखा रखना जरुरी है, नहीं तो कभी-कभी याद नहीं रहता कि फलाना चिट्ठी भेजी कि नहीं. अब विशेषकर जब हम चार-पांच जने मिलकर काम करती हैं तो और भी जरुरी है. इससे सबको आसानी से जानकारी मिल जायेगी कि काम कितना आगे बढा है, कहां अटका है और अब क्या करना है. जाती डाक वाली कापी के लिए एक 80 या 100 पन्ने की सिंगल लाइन वाली कापी ठीक रहेगी. उसमें जानकारी भरने के लिए परिशिष्ट में दिये जैसे खंबे खीच लेना. अगर खंबे और चौडे चाहते हो तो बाये और दाये पन्ने पर फैलाकर खंबे बना लो.

जाती डाक वाली कापी

दिनांक	चिट्ठी क्रमांक	पानेवाला व मुख्य विषय	डाक खर्च

8. प्रकाशन सूचियों का रखरखाव और आती चिट्ठियों की फाइल

प्रकाशकों को पहली चिट्ठी भेजने के 10 दिन बाद से दुकान के नाम डाक आने लगेगी. प्रकाशक पुस्तक सूची और व्यापारिक नियम की जानकारी भेजेंगें. प्रकाशन सूची की पुस्तिकाओं को एक जगह इकट्ठे रखना है. मेरा तरीका है कि बाये ऊपर वाले कोने में एक छोटा छेद बनाकर एक मोटो धागे में पिरोकर इन पुस्तिकाओं को इकट्ठे बांध देती हूं. उन पर क्रम से नम्बर लिख देती हूं. सबसे ऊपर एक कोरे कागज को साथ पिरोकर उसमें कौन से नम्बर पर कौन से प्रकाशन की सूची लगी है ये जानकारी लिख देती हूं.

कुछ प्रकाशक व्यापारिक नियमों की जानकारी अलग चिट्ठी में लिख भेजते हैं. इन चिट्ठियों को 'आती चिट्ठियों वाली फाइल' ऐसा एक फाइल बनाकर उसमें लगाते जाना.

9. दुकान का हिसाब

असल में ये किताबों की दुकान चलाते चलाते बहुत कुछ सीखने को मिल जाता है. इसमें एक है हिसाब रखना. इसके लिए एक 'हिसाब की कापी' और 'एक हिसाब की फाइल' लगेंगे. नकद या बैंक में जो भी पैसा आता जाता है उसे हम हिसाब की कापी में दर्ज करेंगे. हिसाब की कापी में खंबे बनेंगे वो नीचे दिखाये गये हैं. इसे कापी के बाये और दाये पन्नों में फैलाकर बनाना. शुरुआत में होने वाले कुछ जमा और खर्च के कुछ उदाहरण उसमें भरे हैं.

हिसाब लिखते लिखते कभी-कभी साल के अन्त में हम ये जानना चाहते हैं कि अब तक कुल कितनी लागत लगी है, उसमें दान कितना है और लंबे समय का उधार कितना है. साल भर में पुस्तकें खरीदने में कितना खर्च हुआ, कुल कितने रुपये की किताबें बेची, इत्यादि. हिसाब लिखने का एक तरीका बताऊं जिससे बाद में ऐसे जानकारी निकालना आसान हो जायेगा. खर्चे जिस जिस तरह के होते है उन्हें अलग अलग नाम देते है. इसी तरह जमा के अलग प्रकारों के भी अलग नाम देते हैं. जैसे फाइल, कापी, ठप्पा, पिन, कागज इत्यादि सभी के लिए एक नाम - स्टेशनरी.

विवरण वाले खंबे में लिखते समय पहले जमा या खर्च किस तरह का है उसका नाम लिख देना फिर एक आडी रेखा के बाद थोडी बारीकों से या विशिष्ट जानकारी देना. जैसे : दान - सुधा शर्मा, खटीक मोहल्ला से या किताबें खरीदी - राजकमल प्रकाशन से, इत्यादि. जमा और खर्च के कुछ तरह (या नाम) ऐसे हैं-

जमा		खर्च	
दान मिला	-	स्टेशनरी	-
उधार मिला	-	डाक	-
किताबें बेची	-	किताबें खरीदी	-
बैंक ब्याज	-	उधार लौटाये	-
		ट्रान्स्पोर्ट खर्च	-

हर खर्चे का कोई बिल या रसीद बनवा लेना चाहिए. इनके जो पर्चे होते हैं उनपर क्रम से 1,2,3... ऐसे नम्बर लिखना. हिसाब की कापी में खर्चा दर्ज करते समय वाउचर/बिल न. वाले स्तम्भ में इसी नम्बर को लिखना है. अगर किसी खर्चे के लिए बिल या रसीद नही मिला तो अपने हाथ से ही खर्चे का विवरण, दिनांक और कुल रकम लिखकर एक पर्चा बना देना. इन्हे क्रम से हिसाब वाली फाइल में लगाते जाना. महीने के अन्त में नकद और बैंक के जमा और खर्च खंबों का अलग अलग जोड खंबे के सबसे आखिरी लाइन में लिखना. जमा और खर्च में जो फर्क आता है उसे नोट करना. नये महीने का हिसाब नये पन्ने में शुरु करना और सबसे पहली लाइन में पिछले महीने से लाई गई रकम (फर्क) उपयुक्त खंबे में लिखना.

हिसाब की कापी

अगस्त - 1999

दिनांक	विवरण	वाउचर क्रमांक	नकद जमा	नकद खर्च	बैंक जमा	बैंक खर्च
1.8.99	पिछले महीने से लायी गयी रकम			-	-	- -
5.8.99	दान - जमा से		500.00			
5.8.99	स्टेशनरी - पोस्ट कार्ड खरीदे			7.50		
6.8.99	स्टेशनरी - ठप्पा बनवाया			25.00		
6.8.99	नकद बैंक में जमा किया			450.00	450.00	
15.8.99	स्टेशनरी -कापी, फाइल...खरीदे			88.00		
15.8.99	बैंक से नकद		100.00			100.00
28.8.99	दान - रुपा से		50.00			
			650.00	570.50	450.00	100.00

नकद जमा - 650.00 बैंक जमा - 450.00
खर्च - 570.50 खर्च - 100.00
बाकी जमा 79.50 बाकी जमा - 350.00

सितंबर - 99

दिनांक	विवरण	वाउचर क्रमांक	नकद जमा	नकद खर्च	बैंक जमा	बैंक खर्च
1.9.99	पिछले महीने से लाई गई रकम		79.50	-	350	-
1.9.99						

स्टाक रजिस्टर

हमने कितनी किताबें मंगाई, कितनी बेची, कितनी हमारे पास बाकि हैं? इसका हिसाब एक अलग कापी में बनायें. इसे स्टाक रजिस्टर कहते हैं. इसका फायदा यह है कि इसकी सहायता से हम यह तय कर सकेंगे कि

कौन सी किताबें हमे फिर से मंगाना है क्योंकि उनका स्टाक हमारे पास कम है या खतम हो गया है. इस कापी में इस तरह के खंबे बनायें

दिनांक	किताबे मंगाई		किताबें बेची		बाकि जमा	
	प्रकाशक का नाम, बिल नं	संख्या	बेचने का बिल नं	संख्या		

हर किताब के लिये एक अलग पन्ना या आधा पन्न रखें. किताबों के पन्ने प्रकाशकवार लगायें तो सुविधा होगी. कापी के शुरु के पन्नो में किताबों के नाम की सूची और कापी में उनकी पृष्ट संख्या लिखें.

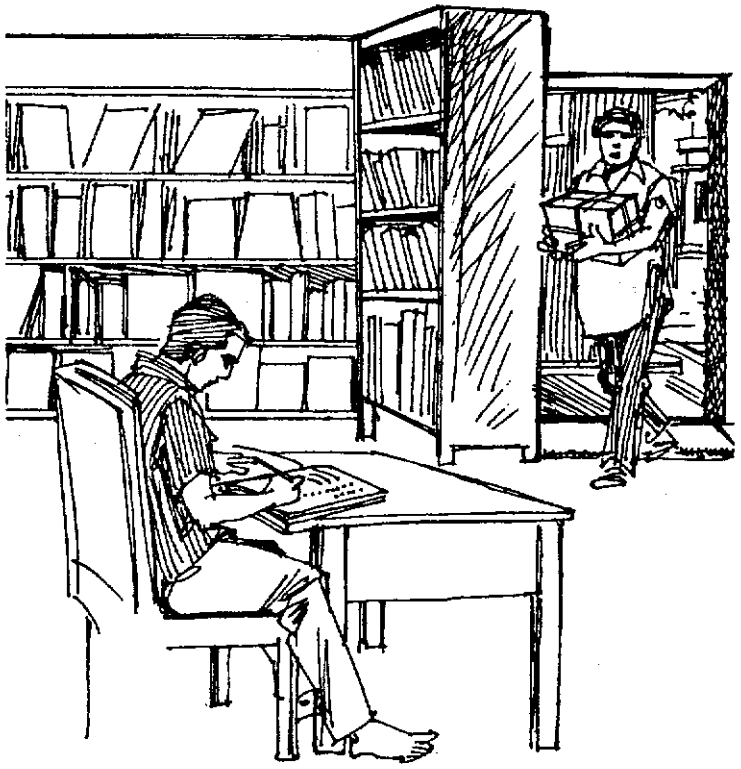

10. किताबें खरीदने के लिए लागत

सूचियां और व्यापारिक नियम की जानकारी मिल गई है तो अगला काम है किताबें बुलवाना. प्रदर्शनी करने लायक किताबें चाहिए - अगर 150 - 200 किताबों की एक-एक प्रति भी रखना चाहें तो कम से कम 3000 या 4000 रुपयों की लागत चाहिए और अगर एक बार किताबें बुलवाकर लगातार गांवों में या बस्तियों में 10-12 प्रदर्शनियां लगानी हो तो 10,000 या 12,000 की लागत हो तो अच्छा चलता है. अब इतने पैसे कहां से आयेंगे? क्या अपने घर के लोग, रिश्तेदार, दोस्त, मुहल्ले/बस्ती में रहले वाले - क्या ये सब इस अच्छे काम के लिए, जिससे जितना बना पडे, कुछ रुपये देकर सहयोग दे सकते हैं? उनके सामने पूरी बात रखनी पडेगी कि क्या करना चाहते हैं और क्यों. पैसा जमा होते से ही हिसाब की कापी में दर्ज करना और पैसे बैंक के खाते में जमा करना.

11. किन लोगों के लिए या किस पाठक वर्ग के लिए किताबें रखेंगे

किताबें तो ढेरो तरह की हैं और उनके पाठक वर्ग भी अलग अलग हैं. दुकान की शुरुआत में ही हमें तय करना होगा कि किन पाठक वर्गों के लिए हम किताबें रखेंगे - बच्चों के लिए? बडों या वयस्क के लिए? नवसाक्षर के लिए? किशोर-किशोरियों के लिए? हमारा संपर्क जिस पाठक वर्ग के साथ ज्यादा है, जिन किताबों में हमारी रुचि ज्यादा है, जानकारी भी है - इन्हीं आधारों पर तय कर पायेंगे. तो दमयन्ती, श्यामा तुम किन लोगों के लिए किताबें रखोगी?

12. किताबें मंगाना

किताबें पढने, पहचानने और परखने की जो भी कोशिशें अब तक की और उससे किताबों के बारे में जो जानकारी बनी है, अब वो बहुत काम आयेगी. अब हमें ये तय करना है कि अपनी सीमित लागत को ध्यान में रखते हुए हम कौन सी किताबों की कितनी प्रतियां स्टाक करना चाहेंगे, यानी कौन सी किताबें महत्वपूर्ण हैं, सस्ती हैं, बिकेंगी इत्यादि बातों को ध्यान में रखते हुए हर प्रकाशन का अलग से मांग पत्र बनाना है. हर प्रकाशन की पुस्तक सूची को ध्यान से देखकर किताबों के बारे में अपनी जानकारी के आधार पर चुने गये शीर्षकों के आगे निशाना लगाना, कितनी प्रतियां मंगानी है लिख लेना. फिर कुल कितनी रकम की होगी - अंदाजन हिसाब लगाना. अगर रकम ज्यादा या कम लगे तो उस हिसाब से मांग में फेर बदल कर लेना. शुरुआत में मांग पत्र बनाने में ज्यादा दिक्कत न हो इसलिए मेरी अपनी जानकारी के आधार पर चुनी गई बच्चों को किताबों की प्रकाशकवार सूची साथ भेज रही हूं. ये 'भाग - 3 पुस्तक सूचियां' में है. किताबें पढते, खरीदते बेचते हुए धीरे धीरे अपनी जानकारी और अनुभव के आधार पर इस तरह की चयन सूची खुद बनाना और उसमें नई छपी किताबों के नाम जोडते रहना.

मांग पत्र

प्रति
नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया
नई दिल्ली

चिट्ठी क्रमांक
दिनांक

प्रिय महोदया/महोदय,

आपके पत्र और सूची के लिए धन्यवाद. नीचे लिखि सूची के अनुसार पुस्तकें, डाक (या रेल्वे) पार्सल से हमारे पते पर भेजें.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर	प्रतियां	मूल्य

इस पत्र के साथ हम डी.डी. न. द्वारा रु. एडवान्स भेज रहे हैं. कृपया बिल व पुस्तकें जल्दी भेजें. बिल मिलते से ही बाकी रकम डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेजेंगे. आशा करते है कि आप अधिकतम छूट देकर पुस्तक और पठन प्रचार के इस काम में हमें प्रोत्साहित करेंगे.

पुस्तकें और बिल के इन्तजार में,

आपकी आभारी

(दमयन्ती)

मांग पत्र का एक नमूना ऊपर दिया है. इस मांग-पत्र को भेजने संबंधी कुछ बातें:

(अ) कितनी रकम की डी.डी भेजें - आम तौर पर प्रकाशक अपने बिक्री नियमों की जानकारी बताते हुए लिखते हैं कि 25, 30, 33.33 या 40 प्रतिशत छूट देंगे. साथ में ये भी जानकारी देते हैं कि डाक खर्च या पार्सल खर्च कितना किसके तरफ होगा. इससे ये अंदाजा लगाना संभव है कि बिल कितने रुपये का बनेगा. कभी कभी कुछ किताबें प्रकाशकों के पास खत्म हो जाती हैं और मांग पत्र में लिखि सभी किताबें वे नही भेज सकते. ऐसे

में बिल की रकम भी कम होगी. इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए कुल मूल्य का 50% का डी.डी बनाकर मांग पत्र के साथ भेजना ठीक रहता है. कुछ प्रकाशक बिल और पुस्तकें एक साथ भेज देते हैं. लेकिन अगर रकम पूरी न हो तो अक्सर प्रकाशक बिल भेजकर बाकी रकम भेजने को कहते हैं. ये रकम भी जब डी.डी या मनीआर्डर द्वारा पहुंचने पर ही किताबें भेजते हैं. कुछ अनुभव के साथ हम रकंम का सही अंदाजा लगा पायेंगे. फिर प्रकाशक भी हमें पहचानने और विश्वास करने लगते हैं जिससे काम कुछ आसान हो जाता है. लेकिन याद रखकर बिल की बाकी रकम को तुरन्त चुका देना अच्छा है - इससे प्रकाशकों का विश्वास बना रहता है.

(ब) डी.डी बनाना - ये बैंक में जाकर वहीं के लोगों की मदद से बनवा सकते हो. प्रकाशक का नाम बगैर गलती या बदलाव के लिखना. इसमें कुछ फेरबदल हो जाये तो बहुत परेशानी होती है. दूसरी बात है, किस जगह पर डी.डी बनाना? ये भी प्रकाशक जिस शहर के हों उसी शहर के नाम का बनाना होता है. डी.डी को पत्र के साथ लगाकर भेजने से पहले रसीद के अपने टुकडे में कहीं ड़ी.डी का नम्बर नोट कर लेना. पत्र में भी यह नम्बर लिख भेजना. अगर कभी आगे किताबें नहीं मिली या हिसाब में यह रकम नहीं जोडा गया हो तो इस नम्बर का जिक्र करने से उसे पता लगाने में बहुत आसानी होती है और नहीं तो बहुत परेशानी.

13. पार्सल उठाना

मांग पत्र भेजने के 15 दिन बाद से पार्सल आने लगते हैं. कुछ डाक से, कुछ ट्रांस्पोर्ट से या रेल्वे पार्सल से. ट्रांस्पोर्ट और रेल्वे पार्सल की रसीद हमें डाक से मिल जाती है. फिर उस रसीद को लेकर हमें ट्रांस्पोर्ट के कार्यालय या पार्सल आफिस जाकर पार्सल उठाना होता है. ये सीमित समय के भीतर ही लाना होता है नहीं तो देर से लेने के लिए और पैसे भरने पडेंगे. डाक का पार्सल अक्सर डाक वाला खुद पहुंचा देता है. रजिस्टरी

वाली पार्सल हो तो हमसे हस्ताक्षर लेकर ही दे सकता है. दिक्कत तभी होती है जब हम लंबे समय के लिए बाहर जा रहे हों. डाक वाले एक हफ्ते से ज्यादा नहीं रख सकते हैं और वापस भेज देते हैं. डाक कार्यालय में अच्छा संपर्क बनाये रखें और उन्हें पहले से सूचित कर दे तो पार्सल बगैर परेशानी के मिल जाता है.

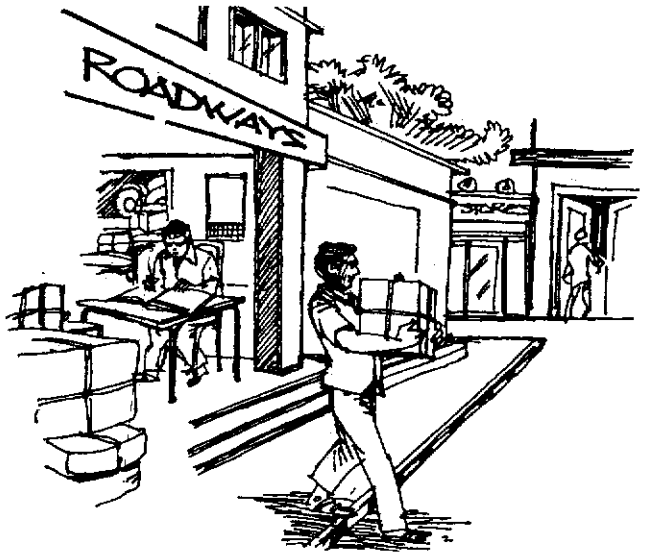

14. पार्सल जांचना, किताबें जमाना

जब किताबों के पार्सल आने लगते हैं तो और बहुत मजा आता है. बडी उत्सुकता रहती है ये देखने के लिए कि कौन सी किताबें आयीं हैं, कौन सी किताब कैसी है? ये किताब इसको या उसको दिखाना है... जो किताबें नई आयी है उन्हे पढकर देखना है... शौकिया किताबों की दुकान चलाने के काम में ये दिन सबसे अच्छा लगता है जब छुट्टी के दिन कमरे में किताबें फैलाकर कुछ देख रही हूं, कुछ छांट रही हूं, कुछ पढ रही हूं, कुछ अलग

अलग करके जमा रही हूं. बस यही सब करते करते दिन निकल जाता है और फिर आधे मन से समेटना पडता है.

काम जल्दी से निपटाना चाहो तो ज्यादा नहीं है. पार्सल खोलो, बिल के साथ आई हुई किताबों को मिलाकर देख लो कि कुछ कम या ज्यादा तो नहीं आ गये. फिर किताबें जमा के रखने का कोई ऐसा तरीका बनाओ कि जब चाहो तब तुरन्त हाथ लग जाये.

दीवार में खुली अलमारी बनी बनाई हो तो , बढिया. नही है तो एक मित्र ने ये अच्छी तरकीब बताई. कुछ ईंटे हो, कुछ लकडी के पटिये - 8-9 ईंच चौडे, 3/4 इंच मोटे और कमरे के हिसाब से 3 या 4 या 5 फुट लंबे और कुछ पुराने अखबार. तीन ईंटों को एक के ऊपर एक जमाकर एक अखबार वाले कागज से सफाई से लपेट देना. ऐसे दो बंडल दो तरफ लगाकर उसपर एक पटिया जमा देना. फिर दो किनारों पर इस तरह के और दो बंडल टिकाकर उसके ऊपर दूसरा पटिया बैठा देना. दिवार से टिकाकर लगायें तो 5 - 6 पटिये वाली किताब की रेक आराम से बना सकते

हैं. उन पर फिर अखबार बिछाकर किताबों को जमा देने से किताबें रखने निकालने की एक अच्छी व्यवस्था बन जाती है.

15. किताबें बेचना

अब आई बेचने की बारी. ये मैं तीन-चार तरह से करती हूं.

(क) घर बैठे बिक्री - हम जहां भी हैं हमारे दोस्तों, रिश्तेदारों, पडोसियों और परिचित लोगों का एक बडा समूह है. जब भी कोई अपने घर आये तो उन्हें किताबें दिखाई, अपनी पसन्द की कुछ दिखाई या उनकी कोई विशेष रुचि हो तो चुनकर किताबें उनके सामने रख दी. वैसे हर व्यक्ति के लिए सही किताब चुन पाना एक बडा ही रोचक काम है. किताबों के बारे में अपनी जानकारी के खजाने को बढाना, लोगों की जरुरत पहचानना, और, लोगों और किताबों में सही जोडे जमाने के दिमागी कसरत में मजा तो आता ही है. साथ ही अच्छी किताब पाने पर कोई जब खुश होती है तो बहुत अच्छा लगता है.

अब कुछ व्यापार व्यवहार की बातें भी कर लें. बाजार से एक छोटी बिल बुक खरीद के रखना और उसके हर पन्ने के ऊपरी हिस्से में अपनी दुकान का ठप्पा लगाकर रखना. कोई भी किताब उधार में मत देना. अगर कोई कहे कि देखकर वापिस लौटा देंगे ती भी मना कर देना. अगर कोई कहे पैसे कल दे देंगे तो कहना कि किताबें भी कल ही ले जायें. बात ये नहीं कि लोग पैसे नहीं देना चाहते या हम उनपर विश्वास नहीं करते. परन्तु लोग सिर्फ पैसे देने के लिए आने का कष्ट नहीं उठाते. ऐसे नियमों को शुरु से ही स्थापित करना बहुत जरुरी होता है नहीं तो किताबों की दुकान कुछ ही दिन में घाटे में चलकर बंद हो जायेगी. हर किताब बेचने पर उसकी रसीद जरुर काटना और हिसाब की किताब में बिक्री तुरन्त दर्ज कर देना.

(ख) डाक से बिक्री - कभी कभी दूर के लोगों तक जानकारी पहुंच

जाती है और लोग डाक से किताबें मंगाना चाहते हैं. मांगी हुई किताबों का बिल, अंदाजन डाक खर्च जोड कर बिल भेज देना. साथ में ये भी लिखना की दुकान के नाम पर डी.डी या मनीआर्डर भेजें. डी.डी या मनीआर्डर मिलने पर किताबों का पार्सल बनाकर भेजना. किताबों पर कागज लपेटकर बांधते समय ऐसे बांधना कि लंबी यात्रा और उठा पटक में नही खुले. और ये भी ध्यान रखना कि एक तरफ खुला दिखे. ऐसे किताबों के पार्सल में डाक खर्च कम लगता है,

(ग) पुस्तक प्रदर्शनी - किताबों को बेचने का सबसे अच्छा तरीका है प्रदर्शनी लगाना. प्रदर्शनी से एक तो हमारे संपर्क का दायरा बढता है. पाठकों को बहुत सारी किताबें एक साथ देखने को मिलती हैं. इससे धीरे धीरे किताबें देखने खरीदने का माहौल भी बनता है. बिक्री कहीं अच्छी होती है और कहीं कम. लोगों का किताबों से परिचय बढाना अपने आप में एक

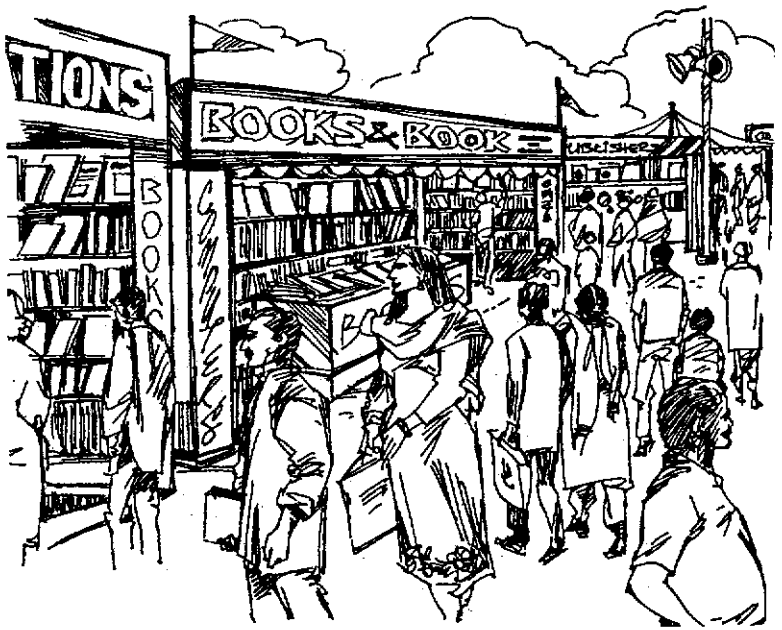

महत्वपूर्ण उपलब्धि है. आसपास की संस्थाओं, स्कूलों, कालेजों में लोगों से संपर्क बनाकर प्रदर्शनियां लगा सकते हैं. कभी कभी किसी पहले से आयोजित कार्यक्रम के साथ प्रदर्शनी लगाना अच्छा होता है. इस काम में दो-तीन साथी सहेली साथ हो तो अच्छा रहता है.

कुछ समय पहले बरगी के डूब क्षेत्र के कुछ गांवों में (जबलपुर और मण्डला जिले के) शैलजा और मैंने मिलकर पुस्तक प्रदर्शनियां लगाई. ये स्कूलों में लगाई थी. स्कूल के प्रिंसिपल या अध्यापकों से पहले से ही बात करके दिन और समय और जगह तय किये. उनका अच्छा सहयोग रहा. हम दो तीन कार्टन भर किताबें लेकर पहुंच जाते. एक ऐसा कमरा चुन लेते जिसमें रोशनी और हवा अच्छी हो. साफ करके, मेज हो तो दिवार के साथ एक कतार में मेजों को जमा देते थे. और मेज नही तो साथ लाये अखबार बिछा देते थे. फिर उम्र के हिसाब से किताबें फैलाकर सजाते.

हमने अलग अलग प्रकाशन की किताबों में से जिन किताबों का चयन किया है उन्हे पढनेवाले बच्चों के उम्र के हिसाब से छांटा है. इसे देखना चाहो तो भाग - 3 देखना. साथ में 'शिशु-साहित्य', 'बाल-साहित्य - 1','बाल साहित्य-2', 'किशोर साहित्य-1', 'किशोर साहित् - 2', 'विज्ञान', 'गणित', 'शौकिया काम की किताबें' ऐसे संकेत कार्ड बना ले गये थे. इन्हीं समूहों के हिसाब से किताबें जमायी और संकेत कार्ड भी लगा दिये. इससे किताबें देखने वालों को बहुत सुविधा होती है. सारी किताबों जमा लेने के बाद दरवाजे के पास अपना एक काउंटर बना लेते. एक व्यक्ति को यहां जमे रहना होता है. कभी भी कोई किताब खरीदना चाहे तो निकलते समय बिल बनवाकर, पैसे देकर किताब ले जा सकते हैं.

बाकी के एक दो व्यक्तियों को - देखने आनेवाले बच्चों की मदद करना, उनके सवालों के जवाब देना, उनकी पसन्द की किताब ढूंढकर देना, कुछ किताबों के बारे में बताना, उनकी रुचियों, जरुरतों की जानकारी लेना, किताबें संभालकर रखने के बारे में बताना, आडे-टेढे बिखरे किताबों को

फिर अच्छे से जमाना और सबसे बढकर एक अच्छा दोस्ताना माहौल बनाना - ऐसे कामों में लगे रहना होता है. हमने एक नियम बनाया था कि एक समय में एक कक्षा के (याने 20 - 30) बच्चे आयेंगे. फिर 20 मिनट या आधे घण्टे तक उन्हें देखने का समय मिलता. फिर वे बच्चे बाहर जाते और एक और किसी कक्षा के बच्चे आते. ज्यादा भीड नही होने देते. इससे बच्चे इत्मिनान से किताबें देख पाते.

एक बार ऐसे हुआ कि पुस्तक प्रदर्शनी लगानी थी और मैं अकेली थी. मैंने उसी स्कूल के चार लडकियों - लडकों को मदद के लिए बुलाया. उनसे बातचीत की कि प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य है बच्चों की बहुत सारी किताबों से पहचान बनाना. हम चाहते हैं कि हर कोई लडका, लडकी किताबें देखे, जिस किताब पर उनका मन आये उसे उठाकर देखें, कुछ पन्ने पलटे, कुछ पढकर देख ले, फिर यह किताब रखकर कुछ और किताब उठाये, परखे. ऐसे करते करते बहुत सारी किताबों को जानने पहचानने और परखने लगें. प्रदर्शनी संभालने वाले हम हैं और हमारा काम है कि इसमें आनेवाले की सुविधा का ध्यान रखते हुए पुस्तकों की व्यवस्था बनाये रखें, उन्हें उनके पसन्द की किताबों तक पहुंचने में मदद करें, किताबों के बारे में बतायें इत्यादि. स्कूल के लडके-लडकियां इस तरह की जिम्मेवारी अच्छी तरह संभालते हैं. मेरे अनुभव में स्कूल के ही कुछ बच्चों की मदद लेकर की गयी प्रदर्शनियां विशेष रुप से अच्छी रहीं.

मैंने एक बार बहुत थोडे समय के लिए गांव के हाट में किताबें लगाई और बेची. हाट में बहुत लोगों का आना जाना होता है. वहां पुस्तकें लगाकर बैठें तो बहुत गांव के लोग देख पायेंगे. उनसे संपर्क बनेगा. नियिमत रुप से जायें, तो लोगों के लिए भी किताबें पाने का एक ठिकाना हो जायेगा. तुम्हारे इलाके में कभी हाट - बजार में किताबों को लेकर बैठो तो इस बारे में एक चिट्ठी जरुर लिख भेजना.

बाप रे ये तो बहुत ही लंबी चिट्ठी बन के निकली. अब खत्म करती हूं.

शौकिया किताबों की दुकान शुरु करने और चलाने के किसी भी दौर में मदद की जरुरत हो तो चिट्ठी लिख भेजना. मैं पहुंच जाऊंगी.

दुकान के लिए शुभकामनायें, और तुम दोनों को ढेर सारा प्यार.

तुम्हारी,
उषा

भाग - 2

जनता के बीच पुस्तकालय कैसे चलायें

विषय सूची

1.	हम शौकिया पुस्तकालय क्यों चलाएं?	35
1.1	हमारा जीवन और शौक	35
1.2	हम और किताबें	38
2	पुस्तकालय चलाना - कुछ लोगों के अनुभव	40
2.1	व्यक्तिगत पुस्तकालय	40
2.2	अपने घर में एक बाल - पुस्तकालय	40
2.3	उमंग किशोरी पुस्तकालय	44
2.4	बगीचे में पुस्तकालय	44
2.5	घर पहुंच लाइब्रेरी	45
2.6	एक अच्छी लाइब्रेरियन	46
3	पुस्तकालय कैसे चलाएं	48
3.1	किताबों की जुगाड	48
3.2	तय समय, तय स्थान, सब के लिए	49
3.3	किताबों की देखभाल	50
3.4	किताबों का लेखा जोखा	51
3.5	पाठकों के सुविधा के लिए किताबें जमाना	52
3.6	किताबों और पाठकों में जोड बिठाना	53
3.7	हर व्यक्ति नियमित पाठक बने	54
4	पुस्तकालय कार्यकर्ता	56

1. हम शौकिया पुस्तकालय क्यों चलाएं?

1.1 हमारा जीवन और शौक

ज्यादा से ज्यादा कमाई वाली एक नौकरी पाने के लिए लगता है हमारी जिन्दगी बंधी हुई है. वह भले ही ऐसी नौकरी हो जिसमें हमारा काम हथियार तैयार करना हो जो एक दिन हमी को खत्म कर देने वाले हो.

ये नौकरी पैसा कमाने के लिए. पैसा जिससे हम कुछ आवश्यक और बहुत सारी अनावश्यक चीजों को खरीद कर उनका उपयोग कर सकें. ऐसी चीजें जो कि हम साफ हवा, साफ पानी, साफ और शांन्तिपूर्ण परिवेश की कीमत पर पाते हैं. इतना ही नहीं, उनमें से अनेक चीजें तो हमारे साथी इंसानों की चैन सुकून की जिन्दगी उजाडकर ही बन पाये हैं.

हमारा काम हमें वह तृप्ति नहीं देता कि हम अपने आसपास के लोगों साथी - बंधुओं के काम आये, वह आत्म गौरव और खुशी नहीं देता कि हमारे काम से किसी को सुकून मिला, किसी की जिन्दगी में कुछ अच्छा हुआ, किसी को सुन्दर-सा कुछ मिला, किसी ने बहुत आनंद पाया. कुल मिलाकर हमारे होने से हमारे आसपास रहने वालों की जिन्दगी बेहतर हुई, उनकी खुशहाली में हमारा भी हाथ है, हमारे काम से हमें ऐसा कुछ अनुभव नहीं होता.

फिर अगर देखें कि क्या हमारी नौकरी हमें कोई विशेष खुशी देती है, तो ज्यादातर यही देखने को मिलता है कि मजबूरी है. कार्यालयों, संस्थाओं, फैक्टरियों में काम तो अपने पसंद का नहीं है. हमारे व्यक्तित्व, हमारे सामर्थ्य और हमारे रुचि की कदर करने वाली नौकरी मिले और उस काम को पूरे मन लगाकर करने जैसा माहौल मिले ऐसा बहुत कम ही होता है.

अब यही हाल है कि दिन भर मन मारकर काम कर लो - शाम को थक

हारकर जैसे तैसे टी.वी. के सामने बैठे रहो. मन मारने के इतने आदी हो चुके हैं कि कोई मन की पूछे तो शायद बता भी नहीं पायें.

एक जमाने में दोस्त रिश्तेदारों का समूह तो होता था. मिलने के बहुत से बहाने - त्यौहार,न्यौता, यूंही, कैरम/शतरंज खेलने, और मिलने की ललक और आदत इतनी कि बहाने की जरुरत भी नही पडे और समय मानो असल में इसी लिये बना हो कि सहेलियों/दोस्तों के साथ कहीं घूम आये. पडोसी के घर से अन्दर बाहर होते ही रहते थे.

अब पडोसियों, दोस्तों, रिश्तेदारों का ऐसा समूह जो सदा मन को गुदगुदाये रखता था - है क्या हमारे पास? अडोस पडोस के लोगों के साथ संपर्क है क्या? त्यौहार भी हो, जो सामूहिक तौर पर मनाये जाते हैं, तो वो ऐसे हैं, जो हमारी संवेदनाओं को आघात पहुंचाते हैं, जैसे बेहद जोर से बजाया जा रहा संगीत (?) आंखों को चुभने जैसी लाईट सजावट और इसी तरह की और कईं बातें.

लेकिन उपाय क्या है? व्यक्तिगत रुप से हम अपने नौकरी और काम की प्रकृति नहीं बदल सकते, न ही हम नौकरी छोड कर निकल सकते हैं. लेकिन एक चीज कर सकते हैं कि हमारा जो अपना समय है, जो पूरे तरह से हमारे वश में है - उस समय में जो होता है, जो करते हैं, उसकी प्रकृति तो हम बदल सकते हैं. हमारा अपना समय ऐसा बनायें जिसमें हर चीज अपने मन की करें. इस खास समय में कभी भी कोई भी कुछ भी नहीं थोप पाये. यह समय बिलकुल हमारा अपना हो. जिन्दगी के इस हिस्से को हम बढाने की कोशिश करें और इसके जरिये अपने और अपने आसपास के लोगों के लिए कुछ खुशहाली बनायें. अपने जिन्दगी का एक टुकडा ही सही एक सुन्दर टुकडा बनायें.

ऐसे ही कुछ सोचकर मैं ने अलग अलग समय में अलग अलग शौक पाले हैं.

कस्बे के बढई की देखा देखी लकडी के काम का चस्का लगा तो धीरे धीरे अपने लिए औजार जुगाडे और अपनी जरुरत का स्टूल, आराम से बैठकर पढने के लिए एक कुर्सी, अपने दोस्त के लिए एक मेज ऐसी ही कुछ और चीजें अपने बाकी कामों के बीच बना लिये. एक बार एक दोस्त ने पुराने कार्टन के गत्तों को जोडकर सोलर कूकर बनाना सिखाया, फिर कुछ समय ऐसा दौर चला कि जब भी दोस्तों रिश्तेदारों में किसी ने सोलर कूकर के बारे में रुचि दिखाई तो उनके लिए एक सोलर कुकर बनाया या उन्हे सिखाते हुए उनके साथ बनाया. हाल में एक महीने की छुट्टी निकाली और वेडछी में रहकर सूत कातना सीख आई.

एक और शौक है जिसमें पैसा तो लगता है लेकिन उसमें जो मिलता है उसकी कीमत क्या लगायें. मैं दूर दूर की यात्राएं करती रहती हूं अपने सहेलियों/साथियों से मिलते रहने के लिए.

मेरे दो-तीन शौक किताबों से जुडे हैं और अब लंबे समय से लगातार साथ चले आ रहे हैं. इतने बढते जा रहे हैं कि चस्का क्या, कहना पडेगा कि भूत सवार है. इसी उम्मीद से यह (पुस्तिका) लिख रही हूं कि ये भूत चार और लोगों को पकड ले तो मैं कुछ छुट्टी पाऊं. यह शौक है किताबें पढने में बच्चों/बडों की रुचि बनाने का काम. इसका एक हिस्सा एक शौकिया किताबों की दुकान जो पहले 'मक्कल साहित्य भण्डार' नाम से बीदर (कर्नाटक) और अब 'बाल साहित्य भंडार' नाम से शाहपुर (बैतूल) और जबलपुर में चला रहे हैं. दूसरा हिस्सा है जहां भी रहूं वहीं किसी न किसी स्तर का पुस्तकालय चलाना. तीसरा स्थानीय जरुरतों को पुरा करने के लिए किताबें बनाना - ये काम हमेशा दूसरों की मदद से ही संभव होता है (क्योंकि मैं बहुत कम स्थानीय भाषायें जानती हूं.) स्थानीय भाषा/ जरुरत की किताबें हम स्टेंसिल पर हाथ से लिखकर फिर सस्ते डुप्लिकेटर (जो आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकते हैं) पर हाथ से छापते हैं.

कुछ मिलाकर कहना पडगा कि हम जो ऐसा एक शौक पालना चाहते हैं जो कि समाज में खुशहाली बढाने का कोई पहलू समाये हुए हो - सब से पहली बात वो हमारा पसंदिदा काम हो.

हर व्यक्ति की अपनी ही विशिष्ट क्षमताएं, रुझान, सामर्थ्य, संभावनाएं. सपोर्ट ग्रूप होते हैं. और उसी हिसाब से हम अपना शौक चुनें और पालें.

ऐसा ही एक शौक है अपने आसपास के बच्चों/बडों के लिए पुस्तकालय चलाना. पुस्तकालय चलाने के अनुभवों, जानकारियों को एक दूसरे के साथ बांटने का सिलसिला चले तो अच्छा रहेगा. इस शौक से जुडी हमारे पास कुछ अनुभव/सोच/जानकारी है जो हो सकता है आपके काम आये.

1.2 हम और किताबें

हम में से कई लोग किताबों में बहुत रुचि रखते हैं. हमको किताबें पढना अच्छा लगता है. कभी कोई किताब बहुत पसंद आयी तो उसे अपने संग्रह का हिस्सा बनाते हैं. किताबें पढने के बाद मन में उमडती बातों की चर्चा दोस्तों और घर के लोगों से करते रहते हैं. उनमें से किसी ने किताब पढने की इच्छा जाहिर की तो किताब पढने के लिए दे भी देते हैं.

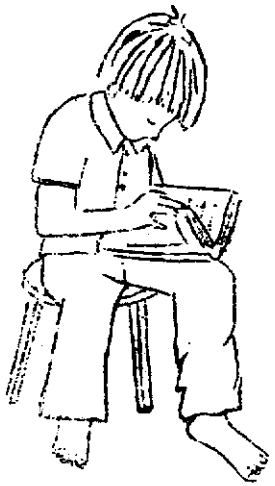

हम में से कुछ लोग अपने आसपास में 'पढने की स्थिति' को लेकर बहुत चिंतित हैं. स्कूल में बच्चे जो किताबें पढते हैं और जो पढना होता है वो तो तैयारी भर है. स्कूली किताबों के अलावा अपनी प्रेरणा से अपने मनोरंजन के लिये किताबें पढें, अपनी रुचि के विषयों पर गैर - स्कूली - किताबें पढते हुए अपनी जानकारी बढा पायें या कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक में रस पायें तभी असली पढना होगा. दुःख की बात यह है कि आधिकांश लोगों का पढना सिर्फ स्कूल की किताबों तक सीमित होकर रह जाता है. स्कूल पुस्तकालय या सार्वजनिक पुस्तकालय जिसमें से बच्चे किताब उधार ले जाकर पढ सके - ऐसे तो दूर्लभ ही देखने को मिलते हैं. अपने घर में, अडोस-पडोस के घरों में, दोस्तों रिश्तेदारों के घरों में, बगैर किताबों के आस्वादन के पल-बढ रहे बच्चों के लिए बहुत बुरा लगता है. मन होता है कि हर बच्चे को एक पुस्तकालय जरुर उपलब्ध होना चाहिए जिसमें से वह किताबें ले जाकर पढ सके. हर बच्चे को एक अच्छी (अच्छा) पाठक बनने का मौका मिलना चाहिए और आदतन पढनेवाली (वाला) बने रहने का मौका मिलना चाहिए.

यदि हमारी किताबों में रुचि है और यदि हमारी ये चिंता भी है कि हर किसी को पढने को मिले तो हम जिस भी तरह का क्यों न हो एक पुस्तकालय जरुर चला सकते हैं.

2. पुस्तकालय चलाना - कुछ लोगों के अनुभव

2.1 व्यक्तिगत पुस्तकालय

मैं ने अपनी रुचि और जरुरत के हिसाब से पढने के लिये कुछ किताबें इकट्ठी की है. मेरे मित्र समूह में काफी लोग इसी तरह की रुचि रखते हैं. कोई अच्छी किताब पढ लेने के तुरंत बाद बडी इच्छा रहती है कि अपने दोस्त भी उस किताब को पढ ले. ऐसे ही अनायास मेरा व्यक्तिगत पुस्तकों का संग्रह मेरे सहेलियों/दोस्तों के लिए किताबें पाने की अच्छी जगह या पुस्तकालय बन गया है. कभी तो वे मेरे घर आकर मेरी किताबों में टटोलते हुए अपनी पसंद का कुछ पाकर उसे पढने ले जाते हैं. और कभी मैं किसी किताब से अभिभूत अपने सहेली के पास ले जाती हूं कि इसे अब ही पढ ले.

2.2 अपने घर में एक बाल - पुस्तकालय

हम जब लगातार एक जगह पर रहे तब अपने बाकी काम के साथ - साथ हमने एक बाल-पुस्तकालय चलाया. यह काम इतना अच्छा और इतना आसान है - मुझे लगता है इसे तो बहुत सारे लोग कर सकते हैं और अगर बहुत सारे लोग अपने घरों में बच्चों के लिए पुस्तकालय चलाते तो कितना अच्छा होता.

घर के एक कमरे में दिवारों में कुछ रैक बने थे. इंटो और लकडी के पटियों को जमाकर कुछ और रैक बनाये. रैक पर पुराने अखबार बिछाये. बच्चों की किताबों को उनपर जमाया. विज्ञान, गणित, जीवनी, समाज ऐसे विषयों में गैर स्कूली किताबें कम ही थे. उनके अलग अलग वर्ग बनाकर जमाये. कहानी की किताबें ज्यादा थी. बच्चों को उनके लायक किताब आसानी से मिले - इस दृष्टि से उन्हें - शिशु, बाल और किशोर साहित्य

ऐसे तीन वर्गों में बांटा और जमाया. तय था कि यह बच्चों के लिए हर समय खुला रहेगा.

इसके बाद तो बहुत कुछ अपने आप होने लगा. एक आध बार पडोस के बच्चों से हमेशा की तरह गप्पियाते हुए कभी बुलाकर किताबें दिखाई और पढने को दी. फिर उनके भाई बहन आये और पुस्तकालय के सदस्य बने. फिर एक दिन स्कूल की छुट्टी के तुरंत बाद अपने क्लास के सभी बच्चों को साथ लाये. वे सब सदस्य बने. फिर उनके भाई बहन और फिर उनके क्लास के साथी. ऐसे होते होते कुछ ही दिनों में 150 सदस्य बन गये. हर बच्चे के नाम से उधारी रजिस्टर का एक पन्ना था जिसमें वे खुद अपना पुस्तकों का ले जाना व लौटाना दर्ज करते थे.

पुस्तकालय एक तरह से खुद-ब-खुद चलने दौडने लगा था. ये बच्चों के लिए हर समय खुला था. अगर कभी काम से बाहर जाना होता था तब भी मकान मालकिन (वो बडी हंसमुख और मिलनसार महिला थी) के पास चाबी रख जाते. बच्चे उनसे चाबी लेकर पुस्तकालय के कमरे का ताला खोलते, किताबें बदलकर, रजिस्टर में उनके नाम के पन्ने पर लिखकर फिर से कमरा बन्द करके चाबी लौटाकर जाते.

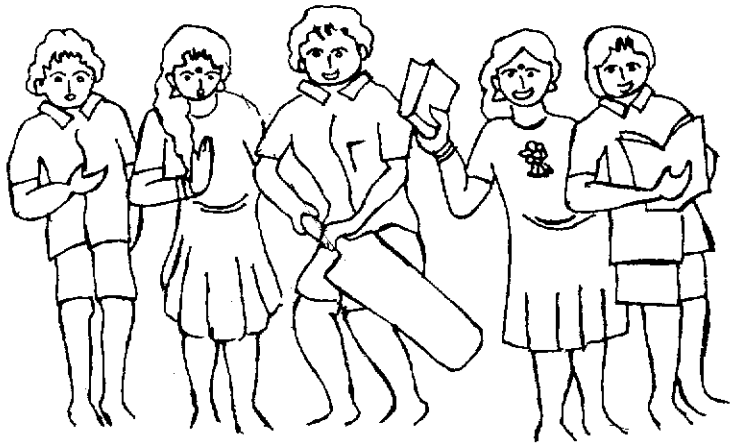

एक बार बाहर का काम ऐसा लंबा चला कि पूरे दो महीने बाद लौटी. पुस्तकालय का कमरा देखा तो किताबें कुछ ज्यादा ही बिखरी पडी थी. उन्हे छांटकर फिर जमाने में घण्टे लग गये. बडा बुरा लग रहा था. लेकिन जब उधारी रजिस्टर देखी और देखा कि इतने सारे बच्चों ने इस बीच इतनी सारी किताबें पढ डाली - लगा किताबों का बिखरना तो छोटी बात है. एक और मजेदार बात थी कि हमारी गैर हाजिरी में बहुत सारे नये सदस्य भी बने थे.

मैं ने पाया है कि बच्चे उधार ली हुई किताबों को लौटाने के मामले में अत्यन्त फिकरमन्द हैं. कभी कभी अपने काम से साइकल पर आते जाते समय किसी बच्चे ने पुकारकर कहा है - 'दीदी, हमारे पास लाइब्रेरी की किताब है. शाम को लाकर दूंगा.' या कभी किसी लडकी ने मुझे घर पर पाते ही जमकर शिकायत की 'दीदी मैं किताबें बदलवाने कल तीन बार आई लेकिन आप नहीं मिली.' कुछ बच्चे ऐसे थे जिन्हें खुद चाबी लेकर कमरा खोलने में शायद संकोच होता था. वे हमारे लौटने का इंतजार करते.

जब स्कूल की पढाई का दबाव ज्यादा नहीं होता तब इतवार की सुबह के दो घण्टे कुछ सदस्य आ जाते और हम घायल, कटी-फटी किताबें छांटकर और उन्हें सी-चिपकाकर कभी नया कवर बनाकर दुरुस्त करते.

मुझे लगता है कि ज्यादातर बच्चों को यह अच्छा लगता है कि उन्हें किताबें देखने, पलटने के लिए अकेले छोड दो. हमारा अक्सर काम से बाहर निकल जाना बच्चों के लिए शायद एक मायने में अच्छा ही रहा.

इसी बात से मुझे ज्योति की याद आती है - हमारे पुस्तकालय का उपयोग करने वाली, जो मुझे बहुत अच्छी लगती थी.

पुस्तकालय के शुरुआत के दिन थे जब चार साल की ज्योति और सात साल का उसका भाई राहुल दोनों किताबें लेने आये. राहुल ने फटाफट अपनी किताब चुन कर लिखवा ली थी और ज्योति पर बहुत जबरदस्ती कर रहा था कि वह जल्दी से चुन ले. यहां तक की उसे चुनने भी नहीं दे रहा

था. राहुल ने कोई एक किताब उठाई और कहा कि बस अब इसे ही लिखवा लो. ज्योति के चेहरे पर के भावों से साफ लग रहा था कि वह इत्मिनान से किताबें देखना चुनना चाहती है. परिस्थिति देखकर मैं ने राहुल से कहा कि वह अपनी किताब लेकर जाये. चाहे तो बाहर इंतजार करे. ज्योति अपनी किताब लेकर थोडी देर में आयेगी. ज्योति ने बडी राहत महसूस की, धन्यवाद देती नजरों से देखकर फिर किताबें देखने में लग गई.

अगले दिन वह अपने चार साल की सहेली अर्चना को ले आई. बडे गर्व से पुस्तकालय दिखाया. उसे समझाया कि चित्र कहानियां (शिशु साहित्य) कहां रखी हैं, फिर कहा - 'तुम्हे जो भी पसंद हो वो ले सकती हो'. इतना कहकर वह इंतजार करने बैठ गई. मैं उसके खुद से निर्णय लेने की गहरी इच्छा से बहुत प्रभावित हुई. इतना ही नहीं, उसकी यह चाहना कि अर्चना भी अपने लिए खुद चुने, भी उतनी ही गहरी थी.

अब जब ये लिख रही हूं, ज्योति पांचवी में है. आश्चर्य होता है ये सोचकर कि हमारे पुस्तकालय के चलते अब छह साल हो रहे हैं.

कुछ साल पहले मैं हर रोज बुद्धनगर कालोनी जाती थी और वहां के बच्चों के साथ एक दो घण्टे बिताती. ये बच्चे गरीब परिवारों से थे. मैं ने कई बार कोशिश की कि ये बच्चे भी आयें और पुस्तकालय का इस्तेमाल करें. कालोनी मेरे घर से थोडी दूर है और बच्चों को आने में दिक्कत होती हैं. वैसे वे आ भी जाते अगर उनके परिवार वालों ने पाबंदी नहीं लगाई होती.

इससे मुझे ऐसा लगने लगा कि वयस्कों के सार्वजनिक पुस्तकालय के जैसा बाल पुस्तकालय भी शहर (छोटे शहर) में एक ही हो तो वो काम नहीं करेगा. बच्चे आजादी से और सुरक्षा से ज्यादा दूर नहीं जा सकते. बाल पुस्तकालय तो हर मोहल्ले में एक होना चाहिए ताकि बच्चे वहां पहुंच पाये.

इस पुस्तकालय के चलते मेरी बडी इच्छा होती थी कि बच्चों के साथ कुछ व्यवस्थित समय मिले और अलग अलग किताबों के बारे में उनका

नजरिया जान पाऊं. लेकिन वैसा मौका अब तक बन नहीं पाया. ताक में बैठी हूं कि कभी जरुर बनेगा.

2.3 उमंग किशोरी पुस्तकालय

जबलपुर की बस्तियों में किशोरियों के साथ स्वास्थ्य का एक कार्यक्रम चल रहा था. किशोरियों के समूह बन रहे थे. लडकियां अलग अलग काम से बाहर निकल रही थी. कुछ स्वास्थ्य की जानकारी देने के लिए, कुछ नाटक के जरिये लडकियों और महिलाओं के हकों के बारे में बताने के लिए. हर सात आठ मोहल्लों के बीच उनके सेंटर का एक मकान भी बन रहा था. इसी दौरान लडकियों के साथ एक बैठक हुई. ऐसे शुरु हुए - उमंग किशोरी पुस्तकालय. हर सेंटर में किताबें रखी गई, हर मोहल्ले में समूह बने और मोहल्ले की दो लडकियों ने जिम्मा लिया. वे सेंटर से किताबें ले जाती और अपने सहेलियों को पढने के लिए देती. किताबों को हफ्ते भर बाद फिर इकट्ठा कर बदलवाने के लिए सेंटर ले जाती. सेंटर में भी दो लडकियों ने जिम्मा ले रखा था. वे हफ्ते में दो दिन सेंटर खोलती और किताबें बदलवाती.

2.4 बगीचे में पुस्तकालय

कीर्ती अपने दो बच्चों के साथ बगीचे में जाती थी. उसकी बहुत इच्छा थी कि बस्ती के बच्चे जो बगीचे में आते थे, उनके लिए एक पुस्तकालय चलाये.

एक दिन वह अपने दो बच्चों के साथ छह किताबें और एक फुटबॉल लेकर गई. मैं भी साथ हो लिया. बगीचे में बस्ती के बच्चे रोज जैसे पहुंचे. पहले सब फुटबॉल खेले. फिर कीर्ती ने पूछा कि उनको पढने के लिए कहानी किताब चाहिए क्या. बच्चे बोले हां. फिर उसने साथ लाई किताबें बांट दी, बच्चों के नाम और किताब नोट कर लिये. फिर बच्चों से कहा कि

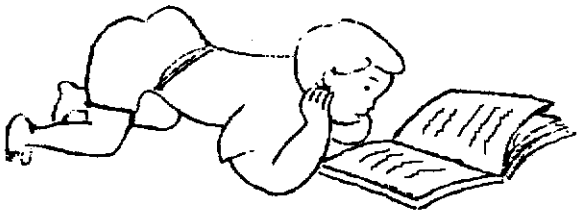

अगले हफ्ते उसी दिन आयेंगे और वे फिर किताब बदल सकते हैं. अगले हफ्ते किताब ले गये और कुछ और ज्यादा बच्चे जुड गये. दो महीने के अन्दर बच्चों की संख्या 100 तक पहुंच गई. और साथी जुड गये. बगीचे में एक बडा सा चबूतरा था. उसी के एक कोने में किताबों के दो ढेर लगते थे. एक तरफ छोटे बच्चों की लाइन लगी रहती थी और दूसरी तरफ बडे बच्चों की लाइन. बच्चे लाइन में अपनी जगह जमाकर अपने नम्बर आने तक खेलते रहते. कीर्ति के साथी जो शिक्षा में रुचि रखते थे, बच्चों के साथ तरह तरह के गीत, खेल, नाटक आदि करते थे. कुल मिलाकर यह तीन घण्टे का साप्ताहिक बाल मेला होता था.

2.5 घर पहुंच लाइब्रेरी

आजकल शहरों में बच्चों के लिए पुस्तकालय के नाम से एक बालभवन का पुस्तकालय होता है. बच्चे वहां पहुंचने के लिए या तो बडों पर निर्भर रहते हैं या नहीं जा पाते. इसीलिए लगता है कि बच्चों के पुस्तकालय को हर गली मोहल्लों में होने चाहिए.

मेरे स्कूली दिनों में मेरे पिताजी के मित्र हर शनिवार को हम भाई बहनों के लिए किताबें लाते थे. वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पुस्तकालय के सदस्य थे जहां हिन्दी पुस्तकों का एक विशाल भण्डार है. इस विशाल भण्डार में से वे हमको ध्यान में रखकर हमारे लिए किताबें चुनकर लाते थे.

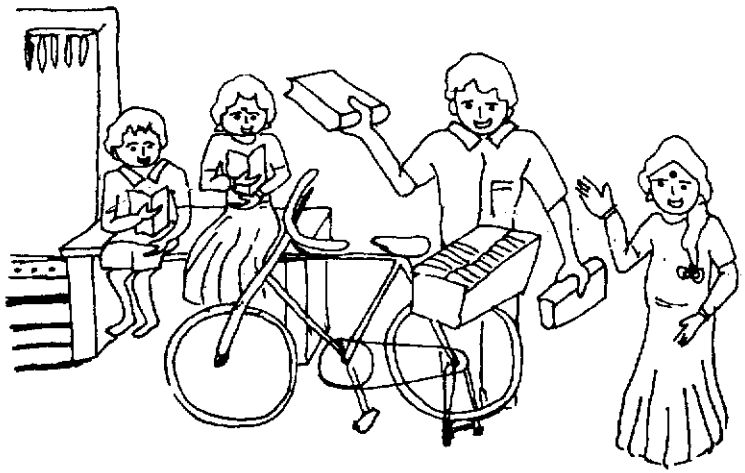

अगर हम खुद उस विशाल भण्डार में जाते तो शायद कुछ भी चुन नहीं पाते. हम भाई बहनों में पढने की आदत इसी तरह लगी और हिन्दी साहित्य की कई अच्छी किताबें पढ डाली. साथ ही कुछ बहुत अच्छा अनुदित साहित्य भी पढा.

इसी तरह एक और घर तक किताबें पहुंचाने का प्रयास मैंने देखा है. एक व्यक्ति दो बडे बडे किताबों से भरे थैले साइकल पर लेकर आता था. एक में उपन्यास होते थे और दूसरे में पत्रिकाएं. हम उनमें से दो उपन्यास और दो पत्रिकाएं चुनते थे. उसका हफ्ते का दिन बंधा होता था और वह हर दिन अलग अलग मोहल्लों में जाता था.

2.6 एक अच्छी लाइब्रेरियन

रजनी आहुजा पटना में एक आयुर्विज्ञान के शोध संस्थान में लाइब्रेरियन का काम करती थी. लाइब्रेरी में शोध के विद्यार्थी आकर पढते लिखते थे. चूंकि शोध के विषय अक्सर किसी विषय विशेष के बारीकी की छानबीन को लेकर होते हैं, लाइब्रेरी में उन विषयों की किताबों को खोज निकालने के

लिए पुस्तकों के वर्गीकरण पद्धति को थोडा गहराई से समझना पडता है. विद्यार्थी किताबें खोज नहीं पाते थे. रजनी ने उनको मदद करने की कोशिश की. लेकिन कुछ लोग तो झेंपते थे और कुछ लोग समझते थे कि उनके विषयों की समझ लाइब्रेरियन को क्या होगी. ऐसे सोचकर रजनी से कम बातें करते थे. रजनी को लगता था कि लाइब्रेरियन होने के नाते उसे पाठकों को उनकी जरुरत के अनुसार सही किताबें पहुंचानी चाहिए. रजनी उनके शोध के विषय का पता लगाती. जब विद्यार्थी चाय पीने कुछ देर के लिए बाहर जाते तो वह उनके मेज पर रखे कागजों को उलट पुलट कर देखती थी. कभी अध्यापकों के साथ बातचीत के दौरान पता लगाती थी. फिर वह उनकी मेजों पर उनके विषय संबंधित किताबों को छांटकर लाकर जमाती थी. उसने एक कार्ड पर संबंधित विषय का नाम और वर्गीकरण संख्या लिखकर मेज पर रख दिया. इस तरह उसने उनका विश्वास पाया और वे लोग उससे अपने विषय की चर्चा करने लगे और वह उनके लिए खोज खोज कर पुस्तकों के अध्याय, पत्रिकाओं के लेख देने लगी. लाइब्रेरी में एक बहुत सुखद और उत्साह से भरा अध्ययन का माहौल बन गया

जैसे जैसे शोध में कुछ नई बातें आने लगी तो विद्यार्थी बहुत ही उत्तेजित होकर अपनी बातें रजनी से कहते और रजनी उससे संबंधित लेखों और ग्रंथों को नये सिरे से खोजती. कभी कभी शोध में ठहराव आ जाता था तब भी रजनी विद्यार्थियों को और संदर्भ खोजने में मदद करती. विद्यार्थियों के शोध कार्यों के उतार चढाव में रजनी की महत्वपूर्ण भागीदारी रही और रजनी को अपने काम से खास तृप्ति मिलती थी.

3. पुस्तकालय कैसे चलायें

हम जिस तरह का भी पुस्तकालय चलायें उसे ठीक ढंग से चलाने के लिए एक सरल व्यवस्था बनानी पडेगी.

3.1 किताबों की जुगाड

लाइब्रेरी के लिए सबसे मुख्य चीज है किताबें. जैसा हमने कीर्ती के अनुभव से देखा है, लाइब्रेरी 8-10 किताबों से भी शुरु कर सकते हैं. लेकिन हमें अपने पाठकों के जरुरत के हिसाब से पुस्तकों की जुगाड करने की क्षमता भी विकसित करनी होगी.

पुस्तकों के स्रोत मुख्य रुप से दो हैं. एक दान और दूसरा खरीदना. किसी भी बडे शहर में लोगों के पास किताबों के संग्रह होते हैं. ऐसा भी होता है कि जिसने संग्रह किया वो आज उन्हें पढने की स्थिति में नही है और न ही उसके परिवार में कोई उन्हें पढना चाहता है. इन किताबों को दान में प्राप्त करता आसान होता है. इनमें कई पुरानी किन्तु संग्रहणीय पत्रिकाएं भी होती हैं जो आज भी रोचक हैं. हमें इनकी किताबों से अपने पाठकों के रुचि के अनुसार छांट लेना चाहिए. ऐसे कई व्यक्तिगत संग्रह पुरानी किताबों की दुकान में भी आ जाते हैं. हमें पुरानी किताबों की दुकानों में किताबें छांटना और मोल भाव करके उन्हे सस्ते में खरीदने की क्षमता भी हासिल करनी होगी. नई किताबें हम चयन सूचियों से खोजकर खरीद सकते हैं.

अब प्रश्न उठता है कि इसके लिए पैसा कहां से आयेगा. साधारण रुप से हमें पाठकों से लाइब्रेरी का चंदा नहीं लेना चाहिए. तो असल में जुगाड का दूसरा स्रोत भी दान ही है. जहां तक संभव हो हम इसका जितना बडा आधार बना सके उतना अच्छा रहेगा. जैसे कोई व्यक्ति अपनी पत्रिका

या अखबार पढकर उसे हमारे पुस्तकालय को दान दे दे. यही बात किताबों पर भी लागू हो सकती है. कई लोग किताबें पढने के बाद उसे रखना नहीं चाहते हैं और अगर उन्हे पता हो कि इस लाइब्रेरी के माध्यम से कई और लोग उसे पढेंगे तो वो जरुर दे देंगे. कई लोग लाइब्रेरी एक अच्छा विचार है मानकर किताबें खरीदने के लिए पैसे भी दे सकते हैं. विशेष कर अगर हम कहें महिलाओं के लिए या बच्चों के लिए या विज्ञान की किताबों के लिए या खेल कूद के बारे में इत्यादि. हमें अपनी जरुरतों का स्पष्ट अंदाजा लगाकर अपनी जरुरत को लोगों के सामने रखना चाहिए. जैसे मानो बच्चों के लिए विश्व कोश खरीदना चाहते है जिनका कुल दाम रु. 1000/- है, इत्यादि. इस पूर्व तैयारी से जब हम मांगते हैं तो सामनेवाले को हमारी इमानदारी और प्रतिबद्धता स्पष्ट हो जाती है और देने वाले को लगता है कि हम एक अच्छे और ठोस काम के लिए दान दे रहे हैं.

गांव में पुस्तकालय चलाने के लिए हमें शहर के किसी व्यक्ति, समूह या संस्था से जुडना पडेगा. कभी कभी गांवों में भी कुछ अध्यापक या अन्य लोगों के पास पुस्तकें मिल जाती है. इसके अलावा गांव के कुछ लोग शहरों में नौकरी करते हैं और वे अपने गांव के पुस्तकालय की मदद के लिए राजी हो सकते हैं. जैसे किसी पत्रिका या अखबार का चंदा या जब वे गांव में आते हैं तो अपने साथ अपनी पुरानी पत्रिकाएं, किताबें आदि लाकर दे सकते हैं.

कुल मिलाकर हम ये कह सकते हैं कि हम अपने जुगाड की प्रवृती को विकसित करें और अच्छे काम के लिए कोई न कोई मदद कर ही देता है.

3.2 तय समय, तय स्थान, सबके लिए

कम पढने लिखने के माहौल में पढने के लिए किसी भी व्यक्ति का छोटे से छोटा प्रयास भी बहुत महत्वपुर्ण है. पुस्तकालय चलाने के हमारे तरीके में ऐसे हर प्रयास को मान्यता मिलनी चाहिए. तो पुस्तकालय की पहली जरुरत है कि उसकी एक जगह तय हो और समय तय हो और इसे पक्के

तौर पर निभाया जाय.

किसी भी सार्वजनिक पुस्तकालय का नियम होता है कि वह निशुल्क हो और वर्ग, जाति, धर्म, लिंग चाहे जो हो, हर एक के लिए खुला हो.

3.3 किताबों की देखभाल

किताबों का हाथ में कैसे धरना, पन्ने कैसे पलटना, किताबों को कैसे रखना, कैसे जमाना - पुस्तकालय के संदर्भ में तो ये सीखने और सिखाने लायक बातें है. दूसरों को सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम खुद हर वक्त इन बातों को ध्यान में रखें और किताबों को प्यार से रखें. उन्हे सलीके से जमाकर रखें - हमारे आसपास काम हो जाने के बाद किताबें बिखरी पडी रहे ऐसा कभी भी न हो. किताबों मोडना मरोडना नही बल्कि उन्हें खूब प्यार से हाथ में थामना चाहिए. पढते समय रुकावट आने पर उन्हें औंधा न रखे, न ही पन्ने का कोना मोडकर निशान बनाएं. पन्ना आसानी से मिले उसके लिए कोई कार्ड का टुकडा या कागज का टुकडा संकेत के लिए लगा कर रखें.

हर किताब को ज्यादा से ज्यादा लोग पढ सके. इसके लिए जरुरी है कि उसे लंबे समय तक अच्छी अवस्था में बनाये रखे. इसके लिए उसपर प्लास्टिक का कवर चढा देना एक आसान और सस्ता तरीका है. जिल्द बांधनें की अपेक्षा किताब का प्लास्टिक कवर चढाने से एक सुविधा यह भी है कि

किताब का शीर्षक पन्ना दिखता है.

किसी किताब की थोडी भी हालत बिगडे तो उसे तुरंत दुरस्त करने के लिये अलग निकाल कर रखना चाहिये. बिगडी हालत वाली किताबों को बिल्कुल नहीं चलायें. पाठकों को अच्छी हालत में ही किताबें मिले जिससे कि वे उसे अच्छा बनाये रखने के आदी हों. दुरस्ती के लिये अलग रखी किताबों को सीकर या चिपका कर ठीक करना, जरुरत हो तो नया कवर चढाना और फिर उसे चलाने के लिये शामिल करना.

3.4 किताबों को लेखा जोखा

पुस्तकालय में अपने पुस्तक संग्रह को बनाये रखना और उसे बढाते जाना एक जरुरी काम है. पुस्तक संग्रह को बनाये रखने में, लेन देन का लेखा जोखा रखने से, बहुत दिनों से न दिखने वाली किताब का पता लगाना और उसे ढूंढ निकालना संभव होता है. किताबों का लेखा जोखा रखने के लिये दो कापियां रखेगें.

(अ) पुस्तकालय का पुस्तक संग्रह. जब भी कोई नई किताब आये उसकी जानकारी इस कापी में लिखेंगे और इस कापी में जो नम्बर बनता है उसे किताब पर भी ठप्पा लगाकर पुस्तकांक वाली जगह में लिखेंगे. पुस्तक संग्रह वाली कापी में लिखने के स्तंभ इस प्रकार होंगे.

तारीख किताब पाने की	पुस्तकांक	किताब का नाम	लेखक	मूल्य	प्रकाशक

(आ) दूसरी कापी पाठक उधारी रजिस्टर की होगी. शुरु के दो पन्ने पाठक सूची के लिये छोड देंगे. हर पन्ने पर क्रमांक लिखेंगे. उधारी रजिस्टर में हर पाठक का नाम और पता होगा, फिर नीचे किताबों के लेन देन को दर्ज करने के लिये स्तंभ इस प्रकार होंगे.

दिनांक	पुस्तक का नाम	पुस्तकांक	लेनेवाले का हस्ताक्षर	लौटाने की तारीख	कार्यकर्ता के हस्ताक्षर

3.5 पाठकों की सुविधा के लिये किताबें जमाना

शैलजा ने बरगी बांध के डूब क्षेत्र के गांवों में बच्चों के लिए पुस्तक प्रदर्शनियां लगाई. साथ में हम चार पांच जने थे. गांव में बच्चे-कुछ तो पढना नहीं जानते थे, कुछ स्कूल कभी नहीं गये थे. पहली दूसरी के बच्चों ने अभी तक पढना नहीं सीखा था. तीसरी चौथी के बच्चे छोटी छोटी कहानियां पढ लेते थे और ऐसे ही दसवीं बारहवी तक के अलग अलग स्तरों और रुचि के पढने वाले थे. हमारे पास करीब 150-200 किताबें थी. हम चाहते थे कि बच्चों को उनके लिये उपयुक्त किताब आसानी से उनके हाथ लगे. वैसे बच्चों की मदद करने के लिये हम लोग तो थे ही लेकिन बच्चे तो खुद ही किताबे ढूंढना ज्यादा पसंद करते थे. इन किताबों में सबसे बडा वर्ग कहानियों का था. हमने इनको 5 स्तरों में बांटा.

1.	शिशु साहित्य	-	चित्र कहानियां
2.	बाल साहित्य	-	1
3.	बाल साहित्य	-	2
4.	किशोर साहित्य	-	1
5.	किशोर साहित्य	-	2

कहानियों के अलावा बाल गीत, विज्ञान, समाज और शौक की किताबें थी. इनकी संख्या कम थी. इसीलिये इन्हे स्तरों में नहीं बांटा. कमरे में दिवाल के किनारे कागज बिछाकर किताबों को इन वर्गों में सजाया और इन वर्गों के संकेत कार्ड लगाये. जिस भी बच्चे को मदद की जरुरत होती हम वह जगह दिखा देते जहां उसके लायक किताबें मिलेंगी. हमारी चिंता यह थी कि ऐसा न हो कि कोई बच्ची दो तीन किताब उठाकर देखे और उन्हें नही पढ पाने की स्थिति में वह यह न तय कर ले कि किताबें उसके बस की नहीं है. हम चाहते थे कि हर बच्चे के हाथ ज्यादातर ऐसी किताबे हाथ लगे जो उसे एहसास दिलाये कि वह पढ सकती है और कि पढना बहुत

ही मजेदार काम है.

पिछले कुछ सालों में अलग अलग पुस्तकालय के बनने के समय साथ रहते हुये जो भी किताबें हाथ लगी उन्हें विषयवार और पाठक वर्ग वार बांटने का प्रयास किया. यही एक सूची के रुप में भाग - 3 में है. यह एक शुरुआती और कच्ची सूची है जिसे बहुत सारे पुस्तकालय कार्यकर्ता अपने अनुभवों के आधार पर बेहतर और पूरा कर सकते हैं. हर पुस्तकालय में पुस्तकों का वर्गीकरण और उनको फैलाना और जमाना, उस पुस्तकालय के पाठक समूह के आधार पर उनकी सुविधा के अनुसार करना जरुरी है.

पुस्तकालय में जब पाठक किताबे देखने आते है तब हर पाठक को किताबें छूने, निकालने, चुनने, पन्ने पलट कर देखने, एकाध पन्ना पढ भी लेने की खुली छूट होनी चाहिये. इसी तरीके से लोगों का पुस्तकों से परिचय होता है और इसके भरपूर अवसर अपने पुस्तकालय में होना ही चाहिये. इस मामले में सुविधा के लिये कुछ नियम बना ले सकते हैं लेकिन रोकटोक का माहौल बिल्कुल नहीं होना चाहिये.

3.6 किताबों और पाठको में जोड बिठाना

हमारे पुस्तकालय के पाठक गण में एक बडा समूह नव पाठकों का है, जिन्हे शायद पहली बार ये किताबें देखने को मिल रहीं हैं. ऐसे में अपने खुद के लिये उपयुक्त किताब यानी कि ऐसी किताब जिसे वो पढ पायेंगे और जिससे उन्हें पढने का आनंद मिलेगा, चुन पाने में उन्हे बहुत दिक्कत हो सकती है. ऐसे में कम से कम शुरुआत के दौर में पाठक की पठन सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुये, उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुये और किताबों की अपनी जानकारी को टटोलते हुये हर पाठक के लिये उपयुक्त किताब ढूंढ कर देना हमारा शायद सबसे महत्वपूर्ण काम है.

3.7 हर व्यक्ति नियमित पाठक बने

हम, जो इस तरह के पुस्तकालय चलाना चाहते हैं, ज्यादातर ऐसी जगहों में काम करते हैं, जहां लोगों के बीच पढने की विशेष संस्कृति नहीं है. ऐसी जगहों में पुस्तकालय एक नई बात है. स्कूल की किताबों के अलावा दूसरी किताब एक नई बात है. स्कूल परिक्षाओं के दबाव से हटकर, अपनी प्रेरणा से, अपनी खुशी के लिये पढना नई बात है. पढने में रस पाना और किताब ढूंढते हुये चार कदम दूर जाना भी एक नई बात है. यह और पढने की संस्कृति से जुडी और बहुत सारी बातें नहीं के बराबर हैं. इस सन्दर्भ में पुस्तकालय को न केवल पुस्तक उपलब्ध कराना है, बल्कि माहौल में इन सब कमियों की भरपाई भी करनी है. पढने की आदत अकेले में नहीं लगती. पढने का चस्का एक पढते समूह का हिस्सा बने रहने पर लगता है. नव पाठकों के बीच पुस्तकालय चलानेवाले हम सब को इन बातों का ध्यान रखकर काम करना बहुत जरुरी हो जाता है.

हमारा एक काम है कि पुस्तकालय की पहुंच जहां तक हो, याने कि आसपास के इलाके में जहां तक से लोग पुस्तकालय आ सकते हैं, ऐसे पुस्तकालय का इलाका निर्धारित करें. हमारा मकसद होना चाहिये कि इस इलाके का हर व्यक्ति एक नियमित पाठक बन जाये और पुस्तकालय इस जिम्मेदारी को निभाने के लिये बढता जाये. यानी कि उसका संग्रह और

हमारी क्षमता उस काम को निभाने लायक बनती जाये.

हर व्यक्ति को पाठक बनाना थोडे लम्बे समय का काम है और इसे कई चरणों में करना पडेगा. शुरुआत में अगर हम हर घर का सर्वे करके जानकारी इकट्ठा कर ले कि कौन कितना पढा लिखा है, किस उमर का है इत्यादि, तो सुविधा होगी.

घर क्रमांक	नाम	उमर	शिक्षा	काम

पाठक बनाने का काम हम एक एक को अलग से न लेकर, समान शिक्षा और रुचि वाले हम उम्र समूह को लेकर कर सकते हैं. जैसे सबसे पहले हम तय कर सकते हैं कि हम पांचवीं, छठी और सातवीं के बच्चों को सदस्य बनायेंगे. तब पुस्तकालय में उनके अनुरुप पुस्तकें जमा करना, उन के लिये उपयुक्त समय क्या होगा, वह समय पुस्तकालय का समय बनाना आदि. ऐसे ही अलग अलग समय पर अलग अलग चरणों में बारहवीं तक के बच्चों को जोडना. उसके बाद विशेष प्रयास से और पढते बच्चों की मदद लेकर उन बच्चों को जोडना जो कभी स्कूल नहीं गये हों या जिन्होंने स्कूल छोड दिया है. इन बच्चों के साथ कहानी पढ कर सुनाना और उनपर आधारित नाटक करना तथा हाथ से करने वाले शौक या गतिविधियां बहुत काम आयेंगी. बडों में कहानी किताबों के अलावा स्वास्थ्य और लोग जिन उद्योगों में जुटे हैं उन विषयों की किताबें रखना, पढवाना अच्छा रहेगा. महिलाओं को जोडने के लिये उनको पसंद आने वाली कहानियां व अन्य किताबें छांटकर उनके लिये अनुकूल समय तय करके उनको जोडने का प्रयास करना होगा. अगर समुदाय छोटा है तो इतने सारे समूहों में बांटने की जरुरत शायद न पडे. कुल चार समूहों में काम हो सकता है, 1) स्कूल जानेवाले बच्चे 2) स्कूल न जाने वाले बच्चे 3) महिलायें और 4) पुरुष.

4. पुस्तकालय कार्यकर्ता

संभावित पाठक और नव पाठकों के बीच पुस्तकालय का काम बहुत तरह के सामर्थ्य मांगता है. पुस्तकालय के काम में उतरनेवाले हम जैसे पुस्तक कार्यकर्ता के पास शायद ही जरुरी सभी सामर्थ्य बने बनाये मिले और शायद ही कोई ऐसा प्रशिक्षण या कोर्स उपलब्ध है जो इस काम के लिये हमे तैयार कर डाले. सच पूछो तो यह एक जन का काम है भी नहीं. फिर भी हम ईमानदारी से काम में लगे रहें तो बहुत कुछ सीखते हुये बहुत से लोगों के लिया पढना संभव बना सकते हैं.

किताबों के बारे में अपनी जानकारी बढाते रहना इस काम के लिये बहुत जरुरी है. ऐसा तो हो नहीं सकता कि हम हर किताब को पढ डालें. लेकिन किताब चुनने में, लोगों की मदद करने में किताबों की थोडी बहुत जानकारी चाहिये ही . अपनी जानकारी को बनाने में हम और जानकार लोगों की मदद ले सकते हैं. उनसे कह सकते हैं कि आप के विषय की दस महत्वपूर्ण किताबों के बारे में हमें बतायें. अपने पाठकों के लिये उपयुक्त किताब ढूंढते हुये पुस्तक की दुकानों में, पुस्तक मेलों में, पुरानी पुस्तक की दुकानों में किसी के व्यक्तिगत संग्रह में, किताबें देखते रहने से ही हम किताबों के बारे में काफी जानकार होने लगते हैं. इसमें एक दो पन्ने पढ डालना, विषय सूची देख लेना, लेखक और पुस्तक परिचय कहीं लिखा हो तो पढ लेना आदि. ऐसा करने में ही यह समझ में आने लगता है कि अपने पाठको में से किसके लिये वह किताब जमेगी. कभी कभार ऐसे व्यक्ति से मुलाकात हो जाये जिसे पुस्तकालय चलाने का कुछ अनुभव हो तो उससे बहुत सारी किताबों की जानकारी एकदम मिल सकती है.

कुछ ऐसी किताबें भी चुन कर रखना जो हमे खुद को बहुत ही पसंद आई हों. किसी आधे मन वाले पाठक को कभी बिठाकर अपनी पसंद की कहानी खूब रस लेते हुये पढ कर सुनाना. अपने को मजे लेते हुये देखकर

हो सकता है कि औरों को भी उस मजे की हवा लग जाये और वे भी किताबों को अलग नजरिये से देखने लगें.

अपने काम का एक हिस्सा किताबों से लगाव का है तो दूसरा है लोगों से लगाव. एक बार मैं एक गांव में रह रही थी और एक पुस्तकालय शुरु करने के सिलसिले में मेरे पास किताबों के कुछ पार्सल आये थे. खोलने जमाने के दौरान पडोस का लडका सलीम आ गया और कोई किताब उलटने पलटने लगा. गांव की घिसटती चलती स्कूल में सलीम ने बहुत धीरे धीरे अक्षर जोडकर पढने से ज्यादा कुछ नही सीखा था. उसने बडे प्रयास के साथ एक किताब पढना शुरु किया और उस प्रयास के बावजूद उस किताब में ऐसा कुछ नहीं था जिससे वह जुड सकता था. मैं और किताबें ढूंढने ढांढने लगी कि एक और कोई किताब निकालूं जो सलीम के लिये सही हो. यह बात मुझे बहुत बुरी तरह से कचोटने लगी कि उसने इतनी मेहनत और कोशिश की और उसे कुछ नहीं मिला. आज भी इतनी सारी किताबें देखने ढूंढने के बावजूद यह पाया है कि शुरुआती पठन के लिये किताबें सचमुच ही बहुत कम हैं. खैर सलीम ने एक बात बडे जोरो से दिमाग में बैठा दी है. वो है सही किताब ढूंढ पाना और जिसे पाठक पढकर तृप्त हो जाये. इतने साल के अनुभवों में मेरे लिये गिने चुने ही ऐसे मौके आये हैं जब मेरी दी हुई किताब को पढकर पाठक ने यह व्यक्त किया हो कि यह किताब तो उन्हे बहुत ही पसंद आई या वे उससे अभिभूत हुये हों. जब ऐसा कुछ होता है कि तब लगता है कि अपना काम सचमुच महत्व का है. एक उदाहरण देती हूं.

एक बार मेदक जिले के शमसुद्दिनपुर में एकल महिलाओं के लिये पांच दिन का साक्षरता शिविर लगाया था. एक सत्र में पांच पांच महिलाओं की टोली थी और एक कार्यकर्ता उन्हें कहानी पढकर सुना रहा था. यादम्मा की टोली में जगन्नाथ प्रेमचन्द की ईदगाह का तेलुगु अनुवाद, जो नेशनल बुक ट्रस्ट से छपी है, पढकर सुना रहा था. उसने एक दो पैरा ही पढा था, जब यादम्मा फूट पडी. 'यह तो बिलकुल मेरी ही कहानी लिखी है. मेरे दो

बच्चे हैं. मेरे पति ने मुझे छोडकर दूसरी शादी कर ली है. मैं मजदूरी करके अपने बच्चों का पेट पाल रही हूं. पिछले क्रिसमस के समय मैं अपने बच्चों के लिये कुछ भी न कर पाई. उनके पास पहनने को भी ढंग के कपडे नहीं थे. कोई मिठाई भी बनाकर नहीं खिला पाई ...' काफी लंबे समय तक वह महिला अपना दिल का दुखडा सुनाती रही और टोली में बैठे हम सब सुनते रहे.

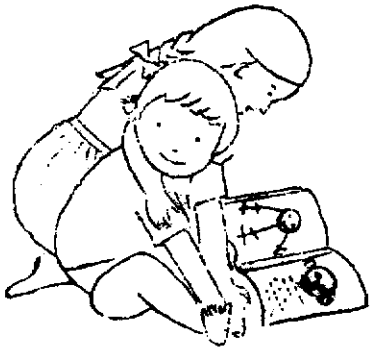

भाग - 3

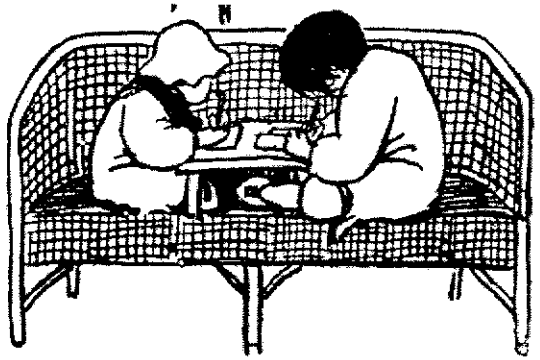

पुस्तक सूचियां

विषय सूची

1	ये पुस्तक सूचियां क्यों?	61
	1.1 पुस्तक वर्गीकरण	61
	1.2 पाठकवार और विषयवार सूचियां	62
	1.3 प्रकाशवार पुस्तक सूची	63
	1.4 प्रकाशकों के पते	63
	1.5 क्या ये सूचियां पर्याप्त हैं?	64
2	पुस्तक वर्गीकरण योजना	65
	2.1 पाठक समूह	65
	2.2 विषय वर्ग	66
3	पाठकवर्ग और विषयवर्ग चयन सूचियां	68
	3.1 सूचियां एक नजर में	68
	3.2 चुनी हुई किताबें : छोटे जन पुस्तकालयों के लिये चयन सूची	69
4	प्रकाशकवार चयनित पुस्तकों की सूचियां : सिर्फ शिशु, बाल व किशोर साहित्य	108
	4.1 सूचियां एक नजर में	108
	4.2 प्रकाशकवार सूचियां	109
5	प्रकाशकों के पते	124

ये पुस्तक सूचियां क्यों?

ये पुस्तक सूचियां इस किताब के पहले दो भागों के लिये पूरक हैं. इनके उद्देश्य हैं:

1. छोटे जनपुस्तकालयों के लिये एक पुस्तक वर्गीकरण योजना
2. इस वर्गीकरण के आधार पर पाठकवार और विषयवार पुस्तक सूचियां
3. प्रकाशकवार पुस्तक सूचियां
4. प्रकाशकों के पते

नीचे हम इसका थोडा विस्तार से परिचय दे रहे हैं.

1.1 पुस्तक वर्गीकरण

किताबों के वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य यह है कि किताबों को दूकान या पुस्तकालय में सजाने का एक ऐसा तरीका हो जिससे कि कोई भी किताब हम आसानी से खोज निकाले. कोई भी वर्गीकरण योजना उसके उपयोग पर आधारित होती है. हमने यहां उसे पाठक समूह और प्रत्येक पाठक समूह के अंदर विषयवार सजाया है. इसका कारण यह है कि इन पुस्तक सूचियों में शिशु, बाल, किशोर, वयस्क आदि विशेष पाठक समूहों के लिये अलग अलग पुस्तकें चुनी गई हैं.

1.2 पाठकवार और विषयवार सूचियां

इन सूचियों में किताबों को उनके पाठक वर्ग के हिसाब से बांटा गया है. जैसे शिशु, बाल, किशोर और वयस्क. बाल और किशोर को भी बाल -1 और बाल - 2 तथा किशोर - 1 और किशोर - 2 में बांटा गया है. इसके अलावा हर पाठक वर्ग के अन्दर किताबों को विषयों के अनुसार बांटा गया है. जैसे बाल गीत, चित्रकथा, कविता, कहानी, उपन्यास, विज्ञान, शौक आदि. वयस्कों की सूची में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कहानी और उपन्यास शामिल हैं. सूचियां एक नजर में पूरी सूची का जोड एक जगह दिया गया है.

इस सूची की सहायता से हम किताबों को पुस्तकालय की आलमारियों या दुकान में इस तरह सजा सकते हैं कि हर किताब को हम आसानी से खोज कर निकाल सके. चूंकि हर वर्ग की कुल किताबों का अंदाजा सूची से लग जाता है, हम सूची के अनुसार उसके लिये जगह बना सकते हैं. शिशु वर्ग की किताबों को निचले शेल्फ या पटरियों पर रखना चाहिये ताकि छोटे बच्चे उन्हे आसानी से देख सकेंगे और अपनी पसंद की किताब चुन सकेंगे. इसी तरह किशोर और वयस्कों की किताबों को ऊपरी शेल्फ में और बाल वर्ग को बीच में रखना चाहिये. हर शेल्फ पर वहां की किताबों का पुस्तक वर्ग - जैसे 'बाल - 1 कहानी' लिखना चाहिये. हर किताब पर उसका वर्ग संकेत लिखना चाहिये. इससे किताबों को वापस उनकी जगह में रखना आसान हो जाता है.

1.3 प्रकाशकवार पुस्तक सूची

इस सूची का मुख्य उद्देश्य है किताबों को प्रकाशकों से मंगवाना. जब हम प्रकाशकों को किताबें मंगवाने के लिये लिखते हैं तो सूची से हम अपना चयन कर सकते हैं और कुल लागत का अंदाजा लगा सकते हैं. सस्ती किताबों की अधिक प्रतियां स्टाक कर सकते हैं. महंगी किताबे कम मंगा सकते हैं.

यह सूची स्टाक रजिस्टर बनाने के लिये भी मददगार साबित होगी. दुकान की किताबों का स्टाक प्रकाशकवार रखने से किताबों का आर्डर/ आदेश पत्र बनाने में आसानी होती है.

1.4 प्रकाशकों के पते

सूची में प्रकाशकों के नाम संकेत रुप से दिये गये हैं. जैसे नेशनल बुक ट्रस्ट के लिये नेबुट्र और चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट के लिये सीबीटी आदि. प्रकाशकों के पतों में हमने पूरा पता और प्रकाशक संकेत दिया है.

1.5 क्या ये सूचियां पर्याप्त हैं?

काम शुरु करने के लिये निश्चय ही पर्याप्त हैं, अन्यथा नहीं. कुछ लोगों को यह सूची बहुत बडी लग सकती है, कुछ लोगों को बहुत छोटी. किसी को लगेगा कि कुछ किताबों को सूची में नहीं होना चाहिये और कुछ को लगेगा कि अन्य किताबों को शामिल करना चाहिये. अपनी अपनी जगह पर ये सभी लोग सही हैं. यह सूची इस किताब के लेखकों ने अपने अनुभवों और जानकारी के आधार पर बनाई है. हर पुस्तक कर्मी को धीरे धीरे अपनी खुद की सूचियां बनानी चाहिये. प्रकाशकों के सूची पत्र हर वर्ष छपते हैं जिनमें वे अपनी नई किताबें जोडते हैं और कभी कभी किताबों के दाम बढाते हैं. उन्हे भी देखकर उनमें से अपने काम की किताबों को अपनी सूची में जोडना चाहिये.

2. पुस्तक वर्गीकरण योजना

2.1 पाठक समूह/वर्ग

क्रम संख्या	समूह	उमर	पाठक संकेत
	बाल साहित्य	3 - 18 साल	
1	शिशु	3 - 6 साल	शि
2	बाल - 1	6 - 8 साल	बा - 1
3	बाल - 2	8 - 11 साल	बा - 2
4	किशोर - 1	11 - 14 साल	कि - 1
5	किशोर - 2	14 - 18 साल	कि - 2
	वयस्क साहित्य	**18 साल से ऊपर**	
6	नव साक्षर - 1	18 से ऊपर	न - 1
7	नव साक्षर - 2	18 से ऊपर	न - 2
8	शिक्षित - 1	18 से ऊपर	प - 1
9	शिक्षित - 2	18 से ऊपर	प - 2
10	शिक्षित - 3	प - 2	प - 3

2.2 विषय वर्ग

2.21 विषय वर्ग - बाल साहित्य

क्रम संख्या	समूह	उमर		पाठक संकेत
1	शिशु	3 - 6 साल	1	चित्र कहानी
			2	शिशु गीत
2	बाल - 1 और 2	6 - 11 साल	1	बाल गीत और नाटक
	बाल - 1	6 - 8 साल	2	कहानी
	बाल - 2	8 - 11 साल	3	लोक कथाएं, परिकथाएं
			4	पौराणिक कथाएं
			5	आधुनिक कहानी
3	किशोर 1 और 2	11 - 18 साल	1	गीत, कविता और नाटक
	किशोर -1	11 - 14 साल	2	लोक कथा - परि कथा
			3	पौराणिक और मिथक कथा
			4	साहस कथा
			5	आधुनिक कहानी
			6	उपन्यास
			7	वैज्ञानिक कहानी/उपन्यास
			8	ऐतिहासिक
5	किशोर -2	14 - 18 साल	1	लोककथा - परिकथा
			2	पौराणिक और मिथक कथा
			3	साहस कथा, यात्रा
			4	आधुनिक कहानी
			5	उपन्यास
			6	वैज्ञानिक कहानी/उपन्यास
			7	ऐतिहासिक
6	बाल और किशोर	6 - 14 साल	1	शौक
			2	विज्ञान
			3	सामाजिक विज्ञान
			4	संदर्भ पुस्तकें

2.22 विषय वर्ग - वयस्क साहित्य

क्रम संख्या	समूह	उमर		विषय
1	नवसाक्षर - 1	18 से ऊपर	1	गीत, कहानी
			2	जानकारी
2	नवसाक्षर - 2	18 से ऊपर	1	गीत, कहानी
			2	जानकारी
3	पढे लिखे - 1,2,3	18 से ऊपर	1	गीत, कविता
			2	नाटक
			3	कहानी
			4	उपन्यास
			5	लेख
			6	शिक्षा
			7	स्वास्थ्य
			8	पर्यावरण
			9	शौक
			10	विज्ञान
			11	सामाजिक विज्ञान
			12	महिला
			13	दलित
			14	आदिवासी
			15	विस्थापित
			16	मजदूर संगठन
			17	बुद्धिवादी
			18	कौमवाद के खिलाफ

3. पाठक वर्ग और विषय वर्ग चयन सूचियां

3.1 सूचियां एक नजर में

क्रम संख्या	पाठक वर्ग /पुस्तक वर्ग	किताबों की संख्या	कुल दाम रुपये
1	शिशु साहित्य/चित्र कहानी, गीत	23	169.50
2	बाल साहित्य - 1/कहानी, गीत	43	572.50
3	बाल साहित्य - 2/कहानी, गीत	96	1225.50
4	किशोर साहित्य -1 /कहानी	61	963.30
5	किशोर साहित्य - 2/कहानी,उपन्यास	66	1167.30
6	बाल/किशोर साहित्य/विज्ञान एवं पर्यावरण	23	300.00
7	बाल/किशोर साहित्य/शौक	17	220.00
8	वयस्क साहित्य/शिक्षा	24	721.00
9	वयस्क साहित्य/पर्यावरण	22	1000.00
10	वयस्क साहित्य/स्वास्थ्य	12	615.00
11	वयस्क साहित्य/कहानी	36	1394.50
12	वयस्क साहित्य/उपन्यास	69	4088.00
		492	12436.60

3.2 चुनी हुई किताबें : छोटे जन-पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

शिशु साहित्य

पाठक वर्ग - 3 से 6 साल के बच्चे — पुस्तक वर्ग - चित्र कहानी, गीत

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	घर और घर		नेबुट्र	97	16	6.50
2	छोटी चींटी काम बडा	पुलक विश्वास	नेबुट्र	97	16	6.50
3	आम की कहानी	देबाशीष देब	नेबुट्र	93	16	6.00
4	कौवे की कहानी	युद्धजीत सेनगुप्ता	नेबुट्र	97	16	6.50
5	हाथी और कुत्ता	बदरी नारायण	नेबुट्र	97	16	7.00
6	मेंढक और सांप	गणेश हालूई	नेबुट्र		16	8.00
7	गुब्बारा	दत्तात्रय पाडेकर	नेबुट्र	96	16	6.50
8	रेलगाडी चले छुक छुक	मृणाल मित्रा	नेबुट्र		16	6.50
9	चिडियाघर की सैर	सनत सुरती	नेबुट्र	96	16	6.50
10	इनकी दुनिया	आरोबिंदो कुंडु	नेबुट्र		16	6.00
11	आधे गोल चक्कर	बदरी नारायण	नेबुट्र	97	16	6.00
12	पशु - पक्षी का नाम बताएं	निरंजन घोषाल	नेबुट्र		16	6.50
13	खोजो पहचानो	जगदीश जोशी	नेबुट्र		16	6.00
14	नन्हें - मुन्ने गीत	निरंकार देव सेवक	सीबीटी	98	24	18.00
15	शिशु गीत		हेमकुण्ट	95	24	20.00
16	नन्हें गीत		हेमकुण्ट	97	24	25.00
17	प्यारे - न्यारे बोल	शेर जंग गर्ग	NCERT	96	8	6.00
18	हमारी मदद कौन करेगा?	उमा बनर्जी	NCERT	96	16	8.00
19	चिडियाघर की सैर	उमा बनर्जी	NCERT	96	16	8.00
20	लालू और पीलू	विनीता कृष्णा	रत्न		10	
21	मीनू और पूसी	गिरजा रानी अस्थाना	रत्न		10	
22	हीरा	मनोरमा जफा	रत्न		14	
23	घेरा	मनोरमा जफा	रत्न		16	
						169.50

चुनी हुई किताबें : छोटे जन पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

बाल साहित्य - ब - 1

पाठक वर्ग - 6 से 8 साल के बच्चे **पुस्तक वर्ग - कहानी, गीत**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	टिलटिल का साहस	स्वप्ना दत्ता	नेबुट्र	96	16	6.00
2	रुपा हाथी	मिकी पटेल	नेबुट्र			
3	नन्हा करमकल्ला	शिन्ता चो	नेबुट्र		30	10.00
4	14 चूहे घर बनाने चले	काझुओ इवामूरा	नेबुट्र		32	11.00
5	फूल और मैं	मनोरमा जफा	नेबुट्र		24	8.00
6	पानी ही पानी	रवी पराजपे	नेबुट्र		16	6.50
7	मुस्कुराता हुआ फूल	जगदीश जोशी	NCERT		24	9.00
8	टिड्डे उडो आकाश मे	सीजो ताशिमा	नेबुट्र		36	16.00
9	धम्मक धम	कमला भसीन	जागोरी	97	36	15.00
10	महागिरिं	हेमलता	सीबीटी	98	16	12.00
11	बुढिया की रोटी	शकर	सीबीटी	96	24	15.00
12	बुढिया की रोटी	शंकर	NCERT	97	12	7.00
13	टमक टुम	भगत सिह	हेमकुण्ट	97	56	25.00
14	चूं चूं	भगत सिह	हेमकुण्ट	98	64	28.00
15	बूजो	भगत सिह	हेमकुण्ट	98	70	25.00
16	खरगोश की चालाकी	शंकर	सीबीटी	98	16	14.00
17	समझ का फेर	शंकर	सीबीटी	91	16	8.00
18	बतूता का जूता	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	राधाकृष्ण	98	32	15.00
19	चिडिया रानी	निरंकार देव सेवक	राजकमल	98	20	16.00
20	खेले कूदे नाचें गायें	धर्मपाल शास्त्री	राजपाल	89	12	10.00
21	अगर मगर	निरंकार देव सेवक	राजपाल	97	24	10.00
22	मीठे मीठे गीत	श्री प्रसाद	राजपाल	90	24	10.00
23	धम्मक धम्मक	प्रयाग शुक्ल	राजकमल	98	24	15.00
24	पंचतन्त्र की कहानियां - 1	शिवकुमार	सीबीटी	98	64	25.00
25	पंचतन्त्र की कहानिया - 2	शिवकुमार	सीबीटी	98	56	25.00
26	पंचतन्त्र की कहानियां - 3	शिवकुमार	सीबीटी	98	64	25.00
27	पंचतन्त्र की कहानियां - 4	शिवकुमार	सीबीटी	98	64	25.00
28	चिडिया	लेव तोल्सतोय	संभावना	96	16	10.00

29	कहानी कहूं भैया	गिजुभाई बधेका	सस्ता	94	70	12.00
30	सात पूंछो वाला चूहा	गिजुभाई बधेका	सस्ता	94	72	12.00
31	चंदाभाई की चांदनी	गिजुभाई बधेका	सस्ता	94		12.00
32	मा जाया भाई	गिजुभाई बधेका	सस्ता	94	98	12.00
33	मेंढक और गिलहरी	गिजुभाई बधेका	सस्ता	94	60	12.00
34	कौआ और मुर्गी		बालसा		24	3.00
35	चल मेरे मटके ठुमक ठुम		बालसा		16	4.00
36	चुटरपुटर की छलांग		सीबीटी	97	48	25.00
37	बुलबुल की किताब	उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी	सा.अकादेमी	99	76	35.00
38	दौडा दौडा मन का घोडा	रमेश थानवी	वाणी	98	24	16.00
39	रुसी और पुसी		एकलव्य			5.00
40	चूहे को मिली पेंसिल		एकलव्य			5.00
41	कहानी संग्रह		एकलव्य			10.00
42	कविता संग्रह		एकलव्य			10.00
43	बकरी और उसका गुड महल		बालसा			4.00
						572.50

चुनी हुई किताबें : छोटे जन पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

बाल साहित्य - ब - 2

पाठक वर्ग - 8 से 11 साल के बच्चे **पुस्तक वर्ग - कहानी, गीत**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	बस की सैर	वल्लीकानन	नेबुट्र	96	32	10.00
2	छुपा रुस्तम	मेलानी सेक्वेरा	नेबुट्र	96	24	10.00
3	मोरा	मुल्कराज आनंद, कपर्ट हैलर	नेबुट्र	97	40	11.00
4	गुलाबो चुहिया और गुब्बारे	कुदसिया जैदी	नेबुट्र	96		
5	जंगल में एक तालाब	उमा आनन्द	नेबुट्र		32	9.50
6	सब का साथी सबका दोस्त	उमाशंकर जोशी	नेबुट्र	97	32	9.00
7	बरसात कब होगी ?	कामाक्षी बालसुब्रह्मण्यन्	नेबुट्र	98	24	8.50
8	नटखट लडकी मामू	नीहार चौधुरी	नेबुट्र	96	38	8.00
9	छोटे पौधे बड़े पौधे	क. स. सेखाराम	नेबुट्र	95		10.00
10	मत्स्या	शांता रामेश्वर राव	नेबुट्र	97	16	9.50

11	दुमदार कहानी	एम. सी. गब्रीयल	नेबुट्र		32	10.00
12	मुत्थू के सपने	कामाक्षी बालसुब्रह्मण्यन	नेबुट्र		32	9.50
13	पगला आम		नेबुट्र		32	10.00
14	महके सारी गली गली		नेबुट्र		64	12.00
15	लाल पतंग	गीता धर्मराजन	नेबुट्र	96	24	8.00
16	संकट सांप का	रस्किन बांड	नेबुट्र		32	7.00
17	लालची बछिया गुलाबो	मोमोको इशिई	नेबुट्र		32	13.50
18	जादुई बैल		करेन्ट	86	44	17.50
19	सोने की खेती		करेन्ट	88	48	24.00
20	दादाजी का चिड़िया घर	रस्किन बांड	मेधा	97	32	25.00
21	मुँहपटक और धरपटक	सुकुमार राय	मेधा	97	32	25.00
22	पौराणिक कहानिया - 1	सावित्रि	सीबीटी	98	64	25.00
23	पौराणिक कहानिया - 2	सावित्रि	सीबीटी	98	64	25.00
24	पौराणिक कहानियां - 3	सावित्रि	सीबीटी	98	52	25.00
25	अम्मा सबकी प्यारी अम्मा	शंकर	सीबीटी	89	20	9.00
26	भारत की लोक कथानिधि - 1	शंकर	सीबीटी	98	104	37.00

27	भारत की लोक कथानिधि - 2	शंकर	सीबीटी	98	104	37.00
28	गुड्डी	विजया वासुदेव	सीबीटी	98	48	27.00
29	चुमकी ने चिट्ठी डाली	मित्र फुकन	सीबीटी	94	16	10.00
30	लौट के बुद्धू घर को आये	सरोजनी प्रीतम	सीबीटी	94	32	14.00
31	चोटी गठबंधन	घनश्याम मुरारी सक्सेना	सीबीटी	97	32	18.00
32	झरोखा - 1		रत्न		40	
33	झरोखा - 2		रत्न		48	
34	बच्चों की कहानियां		सीबीटी	98	112	25.00
35	खलीफा तरबूजी	के.पी.सक्सेना	संभावना	94	32	10.00
36	सुनहरे सपने	भगतसिंह	हेमकुण्ट	97	96	25.00
37	चांदनी रातें	भगतसिंह	हेमकुण्ट	97	96	25.00
38	चिरिका और बिल्ला	विताली बिआनकी	संभावना	96	32	10.00
39	गुठली	लेव तोल्स्तोय	संभावना	96	16	10.00
40	पिंजरे में तोता	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	संभावना	96	16	10.00
41	जंगल की कहानियां	प्रेमचन्द	हंस	92	44	15.00
42	लड़का और सांप	शिप्रा राय	राजकमल	98	24	15.00

43	बिल्ली के बच्चे	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	राजकमल	98	24	15.00
44	जतीन का जूता	सुकुमार राय	राधाकृष्ण	97	32	16.00
45	अब्बू खां की बकरी	जाकिर हुसैन	राधाकृष्ण	98	52	16.00
46	उसी से ठण्डा उसी से गरम	जाकिर हुसैन	राधाकृष्ण			16.00
47	सच्चाई का फल	चौधरी शिवनाथ सिंह	सस्ता	95	32	6.00
48	दुनिया के अचरज	मुरारीलाल शर्मा	सस्ता	95	32	6.00
49	बौने का वरदान	प्रह्लाद रामशरण	सस्ता	95	34	6.00
50	चिड़िया जीती राजा हारा	गौरी शंकर लहरी	सस्ता	96	32	6.00
51	सोने की नदी	सुधा जैन	सस्ता	96	36	6.00
52	मूरखों की दुनिया	नारायण दत्त पांडे	सस्ता	96	32	6.00
53	कुन्ती के बेटे	विष्णु प्रभाकर	सस्ता	95	32	6.00
54	सेवा करे सो मेवा पावे	यशपाल जैन	सस्ता	96	32	6.00
55	जब दीदी भूत बनी	विष्णु प्रभाकर	सस्ता	96	36	6.00
56	अनोखी सूझबूझ	आनन्द कुमार	सस्ता	95	38	6.00
57	युवक की चतुराई	आनन्द कुमार	सस्ता	87	39	6.00
58	भारतीय लोक कथाएं		सस्ता	93	88	8.00

59	सिंहासन बत्तीसी		सस्ता	93	54	8.00
60	हमारी बोध कथाएं		सस्ता	96	62	8.00
61	कहावतों की कहानियां	महावीर प्रसाद पोद्दार	सस्ता	98	158	15.00
62	बूझो तो जानें	आनन्द कुमार	सस्ता	97	48	5.00
63	छत्तीसगढ की लोक कथाएं	गोपाल चन्द्र अग्रवाल	प्रकाशन विभाग		28	
64	रऊफ चाचा का गदहा		प्रकाशन विभाग		112	
65	आगरा में अकबर	कन्हैयालाल नंदन	प्रकाशन विभाग		36	
66	भारत की लोक कथाएं	मुल्कराज आनंद	प्रकाशन विभाग		40	
67	आसमान की मेज	शशिप्रभा शास्त्री	प्रकाशन विभाग		38	
68	तेलुगु लोक कथाएं - II	सरगु कृष्णमूर्ती	प्रकाशन विभाग		26	
69	और पेड़ गूंगे हो गए	दिविक रमेश	प्रकाशन विभाग		44	
70	दो सिर वाला दैत्य	रमेश कौशिक	प्रकाशन विभाग		54	
71	तुम्हें गुस्सा आ रहा है	विमलेश कान्ति वर्मा	प्रकाशन विभाग		26	
72	परियों की कहानियां	श्रीकान्त व्यास	राजपाल	98	80	20.00
73	बर्फ की रानी	श्रीकान्त व्यास	राजपाल	98	80	20.00
74	ईसप की कहानियां	जहूर बख्श	राजपाल	98	80	20.00

75	आसमान भी दंग	नवीन सागर	संभावना	96	28	10.00
76	लोग उड़ेंगे	वर्जीनिया हैमिल्टन	आधार	97	16	15.00
77	अण्डा और डण्डा	एस.सिवादास	आधार	97	26	15.00
78	पहले मुर्गी आयी या अण्डा	राणा प्रताप सिह	आधार	97	30	15.00
79	पंजाब की लोक कथाएं	श्रीमति विजय चौहान	राजपाल		40	
80	बिहार की लोक कथाएं	प्रकाशवती	राजपाल		40	
81	असम की लोक कथाएं	कमला सांकृत्यायन	राजपाल		40	
82	बंगाल की लोक कथाएं	हंस कुमार तिवारी	राजपाल		40	
83	हरियाणा की लोक कथाएं	देवी शंकर प्रभाकर	राजपाल		40	
84	मध्य प्रदेश की लोक कथाएं	रमेश बक्षी, अचला शर्मा	राजपाल			20.00
85	बच्चा टोली		भाष्षा		56	12.00
86	मीश्का का दलिया	निकोलाई नोसोव	भाष्षा		18	5.00
87	बिल्लियों की बारात	वैंडा गैग	भाष्षा	95	32	5.00
88	अक्षर चित्र	विष्णु चिंचालकर	भाष्षा	97	16	5.00
89	बात की बात ठिठोली की ठिठोली		भाष्षा	97	22	2.50
90	निर्बुद्धि का राजकाज	गोपालदास	साहित्य अकादमी	97	94	30.00

91	जब दरियाई हाथी भी झबरा था	निक ग्रीन्स	नेबुट्र	97	142	84.00
92	जब शेर भी उडान भरता था	निक ग्रीन्स	नेबुट्र	96	140	75.00
93	उत्तर प्रदेश की लोक कथाएं	सावित्री देवी वर्मा	राजपाल			20.00
94	राजस्थान की लोक कथाएं	शान्ति भट्टाचार्य	राजपाल			20.00
95	हिमाचल की लोक कथाएं	संतोष शैलजा	राजपाल			20.00
96	पडोसी देशों की लोक कथाएं	विजय राघव रेड्डी	राजपाल			20.00
						1225.50

75	आसमान भी दंग	नवीन सागर	संभावना	96	28	10.00
76	लोग उड़ेंगे	वर्जीनिया हैमिल्टन	आधार	97	16	15.00
77	अण्डा और डण्डा	एस सिवादास	आधार	97	26	15.00
78	पहले मुर्गी आयी या अण्डा	राणा प्रताप सिह	आधार	97	30	15.00
79	पंजाब की लोक कथाएं	श्रीमति विजय चौहान	राजपाल		40	
80	बिहार की लोक कथाएं	प्रकाशवती	राजपाल		40	
81	असम की लोक कथाएं	कमला सांकृत्यायन	राजपाल		40	
82	बंगाल की लोक कथाएं	हंस कुमार तिवारी	राजपाल		40	
83	हरियाणा की लोक कथाए	देवी शकर प्रभाकर	राजपाल		40	
84	मध्य प्रदेश की लोक कथाएं	रमेश बक्षी, अचला शर्मा	राजपाल			20.00
85	बच्चा टोली		भाझा		56	12.00
86	मीश्का का दलिया	निकोलाई नोसोव	भाझा		18	5.00
87	बिल्लियों की बारात	वैंडा गैग	भाझा	95	32	5.00
88	अक्षर चित्र	विष्णु चिचालकर	भाझा	97	16	5.00
89	बात की बात ठिठोली की ठिठोली		भाझा	97	22	2.50
90	निर्बुद्धि का राजकाज	गोपालदास	साहित्य अकादमी	97	94	30.00

91	जब दरियाई हाथी भी झबरा था	निक ग्रीन्स	नेबुट्र	97	142	84.00
92	जब शेर भी उडान भरता था	निक ग्रीन्स	नेबुट्र	96	140	75.00
93	उत्तर प्रदेश की लोक कथाएं	सावित्री देवी वर्मा	राजपाल			20.00
94	राजस्थान की लोक कथाएं	शान्ति भट्टाचार्य	राजपाल			20.00
95	हिमाचल की लोक कथाएं	संतोष शैलजा	राजपाल			20.00
96	पडोसी देशों की लोक कथाएं	विजय राघव रेड्डी	राजपाल			20.00
						1225.50

चुनी हुई किताबें : छोटे जन-पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

किशोर साहित्य -क - 1

पाठक वर्ग - 11 से 14 साल के किशोरियां, किशोर — **पुस्तक वर्ग - कहानी**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	स्वामी और उसके दोस्त	आर.के नारायण	नेबुट्र	97	166	23.50
2	तेरह अनुपम कहानियां		नेबुट्र		152	34.00
3	चमकदार गुफा	अरुप कुमार दत्त	नेबुट्र	96	32	10.00
4	सफेद घोडा	अमरेन्द्र चक्रवर्ती	नेबुट्र	96	28	10.00
5	राजा जो कंचे खेलता था	एच. सी. मदन	नेबुट्र	97	30	10.00
6	हिमालच की चोटी पर	बचेन्द्री पाल	नेबुट्र	93	32	6.00
7	राम कथा	हंसा मेहता	नेबुट्र	97	64	10.00
8	हमारा नाटक		नेबुट्र	97	96	12.00
9	वीरो की कहानियां	राजेन्द्र अवस्थी	नेबुट्र	97	64	8.50
10	महा भारत	के. कुटुम्ब राव	नेबुट्र	97	64	8.00
11	बहादुर टॉम	मार्क ट्वेन	राजपाल	98	80	20.00
12	कठपुतला	कार्लो कोलोदी	राजपाल	97	80	15.00
13	काला घोडा	अन्ना सेवेल	राजपाल	98	80	20.00
14	राबिन्सन क्रूसो	डेनियल डिफो	राजपाल	97	88	15.00
15	गुलिवर की यात्राएं	जोनाथन स्विफ्ट	राजपाल	97	88	15.00
16	तीसमार खां	माईगेल द सरवांते	राजपाल	97	88	15.00
17	जादू का दीपक		राजपाल	97		15.00
18	जादूनगरी	लेविस कैरोल	राजपाल	97	80	15.00
19	सिन्दबाद की सात यात्राएं		राजपाल	98	80	20.00
20	फूल जैसी लडकी		NCERT	87	40	5.30
21	सब्बू सटपट	हरगोविन्द मोदी	प्रकाशन विभाग	94	32	18.00
22	जंगल में मोर नाचा	श्याम सिंह शशि	प्रकाशन विभाग	90	40	8.00
23	कार्बन कापियों की करामत	सुरेखा पाणदीकर	प्रकाशन विभाग	93	32	11.00
24	आजा होजा	मस्तराम कपूर	प्रकाशन विभाग	90	24	9.00
25	पिकू के कारनामें	कार्लो कलोदी	प्रकाशन विभाग	94	102	32.00
26	बिहार की लोक कथाएं	मृदुला सिन्हा	प्रकाशन विभाग	95	46	22.00
27	कश्मीर की लोक कथाएं	नन्दलाल चत्ता	प्रकाशन विभाग	90	84	17.50

28	कौरवी लोक कथाएं	मानसिंह वर्मा	प्रकाशन विभाग	92	34	15.00
29	अम्मा का परिवार	सरोज मुखर्जी	सीबीटी	98	62	25.00
30	कुछ और कहानियां		सीबीटी	98	112	25.00
31	नई कहानियां		सीबीटी	98	112	25.00
32	बीस और कहानियां		सीबीटी	98	120	26.00
33	बिल्ली की कहानी	महात्मा भगवानदीन	सर्वसेवा संघ	98	64	16.00
34	बिल्ली हाउस बोट पर	अनिता देसाई	सा. अकदेमी	96	32	25.00
35	जंगल टापू	जसबीर गुल्लर	सा. अकदेमी	98	64	40.00
36	हाथी की पों	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	वाणी	97	20	10.00
37	अनाप शनाप	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	वाणी	96	16	18.00
38	अनोखा चोर	शरतचन्द्र	संभावना	96	16	10.00
39	नटखट पिल्ला	एन्तोन चेखव	संभावना	96	24	10.00
40	आज नहीं पढूंगा	कृष्ण कुमार	संभावना	96	60	15.00
41	गोपी गवैया बाघा बजैया	उपेंद्रकिशोर रायचौधरी	संभावना	96	40	15.00
42	किस्सा हातिमताई	ऋषि प्रियदर्शी	संभावना	96	48	15.00
43	किस्सा तोता-मैना	ऋषि प्रियदर्शी	संभावना	96	48	15.00
44	हितोपदेश	अनुपम	संभावना	96	24	18.00

45	कथासरितसागर	पुष्प जितेन्द्र	संभावना	96	24	18.00
46	एक खंभा सभागृह	मालती शर्मा	प्रकाशन विभाग	93	36	16.00
47	बस पांच मिनट	शकुंतला वर्मा	प्रकाशन विभाग	97	30	10.00
48	राजाजी की लघु कथाएं	चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य	सस्ता	98	100	10.00
49	गिरगिट	अन्तोन चेखोव	भाझा	97	24	2.50
50	चूहे और चूहे	जे. बी. एस. हैल्डेन	भाझा	97	20	2.50
51	बाजी	ल्यू शाओ थाङ	भाझा	97	17	2.50
52	फुग्गे का वह दिन	जेम्स ए. स्मिथ	भाझा	97	13	5.00
53	इंद्रधनुष	भगत सिंह	हेमकुण्ट	97	125	30.00
54	दुनिया सबकी	सफदर हाश्मी	सहमत	97	44	25.00
55	यदि होता किन्नर नरेश मैं	जितेन्द्र मित्तल	संभावना	96	40	25.00
56	ईद का त्योहार	प्रेमचन्द	संभावना	96	24	12.00
57	पंच परमेश्वर	प्रेमचन्द	संभावना	98	32	15.00
58	मंदिर	प्रेमचन्द	संभावना	97	24	12.00
59	सबसे बडा तीर्थ	प्रेमचन्द	संभावना	95	24	10.00
60	कफन		संभावना	96	20	15.00
61	गोटचा		सा. अकादेमी			25.00
						963.30

चुनी हुई किताबें : छोटे जन-पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

किशोर साहित्य -क - 2

पाठक वर्ग - 14 से 18 साल के किशोरियां और किशोर | **पुस्तक वर्ग - कहानी, उपन्यास**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	विश्व की श्रेष्ठ कहानियां		सस्ता	93	18	8.00
2	जातक कथाएं	भदन्त आनन्द कोसल्यायन	सस्ता	98	250	20.00
3	महाभारत कथा	चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य	सस्ता	97	420	35.00
4	दशरथनंदन श्रीराम	चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य	सस्ता	98	350	30.00
5	चन्द्र पहाड	बिभूतिभूषण बंधोपाध्याय	सा. अकादेमी	94	118	30.00
6	गोसाई बागान का भूत	शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय	सा. अकादेमी	97	86	30.00
7	रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य - 1	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	सा. अकादेमी	97	158	30.00
8	रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य - 2	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	सा. अकादेमी	97	152	30.00
9	कुत्ते की कहानी	प्रेमचन्द	राजपाल	97	32	15.00
10	मेरी कहानी	प्रेमचन्द	राजपाल	97	24	15.00
11	पारसमणि	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	राजपाल	97	32	12.00
12	काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	राजपाल	96	32	15.00
13	भोला राजा	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	राजपाल	96	32	15.00
14	मास्टर जी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	राजपाल	96	32	12.00
15	राजा का न्याय	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	राजपाल	97	32	12.00
16	पुस्तकें जो अमर है	मनोज दास	नेबुट्र		64	
17	पांच कहानियां	मोहिनी राव	नेबुट्र		64	
18	अमर ज्योति	गोपीनाथ तलवलकर	नेबुट्र		64	
19	मेरी चुंबकीय उत्तरी ध्रुव यात्रा	प्रीति सेन्गुप्ता	नेबुट्र		56	
20	आधुनिक एशियाई कहानियां		नेबुट्र		138	23.00
21	चुनिन्दा कहानियां - 1	प्रेमचन्द	सा.अकदेमी	96	96	30.00
22	चुनिन्दा कहानियां - 2	प्रेमचन्द	सा.अकदेमी	96	98	30.00
23	जंगल में एक रात	लीलावती भागवत	सा.अकदेमी	99	48	25.00
24	अचरज ग्रह की दन्तकथा	ताजिमा शिन्जी	सा.अकदेमी	97	64	40.00
25	अंतरिक्ष में विस्फोट	जयंत विष्णु नारलीकर	सा.अकदेमी	96	92	30.00
26	मोरों वाला बाग	अनिता देसाई	सा.अकदेमी	95	39	30.00
27	बच्चों ने दबोचा चोर	गंगाधर गाडगील	सा.अकदेमी	99	55	25.00

28	वनदेवी	कल्वी गोपालकृष्णन	सा.अकदेमी	98	56	25.00
29	बिखरे फूल	भगत सिंह	हेमकुण्ट	98	125	28.00
30	आकाश दीप	भगत सिंह	हेमकुण्ट	98	130	28.00
31	हमीरपुर के खण्डहर	नीलिमा सिन्हा	सीबीटी	93	112	16.00
32	खेल खेल में शिक्षा	विष्णु चिंचालकर	भाझा	98	16	5.00
33	तोता	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	भाझा	97	5	5.00
34	पुरस्कार	जयशंकर प्रसाद	कथा	94	20	15.00
35	अभिशाप	पुधुवई रा रजनी	कथा	97	20	15.00
36	पारो की कहानी	सगरा मेहदी	कथा	94	20	15.00
37	अर्जुन	महाश्वेता देवी	कथा	98	20	15.00
38	स्त्री का पत्र	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	कथा	91	20	15.00
39	पंच परमेश्वर	प्रेमचन्द	कथा	97	20	15.00
40	स्पर्श	जयवन्त दलवी	कथा	97	20	15.00
41	दो हाथ	इस्मत चुगताई	कथा	98	20	15.00
42	फैसला	मैत्रेयी पुष्पा	कथा	96	20	15.00
43	थकावट	गुरबचन सिंह भुल्लर	कथा	94	20	15.00

44	समुद्र तट पर	ओ. वी. विजयन	कथा	97	20	15.00
45	भोला	राजेंद्रसिंह बेदी	कथा	97	20	15.00
46	छुट्टी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	संभावना	96	16	10.00
47	घड़ियों की हड़ताल	रमेश थानवी	संभावना	89	60	15.00
48	ह य व र ल	सुकुमार राय	संभावना	96	44	12.00
49	अगडम - बगडम	सुकुमार राय	संभावना	92	40	10.00
50	आल्हा - ऊदल	ऋषि प्रियदर्शी	संभावना	96	40	15.00
51	वासवदत्ता	अनुपम	संभावना	96	24	18.00
52	मुद्राराक्षस	अभिषेक	संभावना	96	24	18.00
53	अर्थशास्त्र	अभिषेक	संभावना	96	24	18.00
54	मेघदूत	जितेन्द्र मित्तल	संभावना	96	24	18.00
55	शकुन्तला	अभिषेक	संभावना	96	24	18.00
56	मिट्टी की गाडी	पुष्प जितेन्द्र	संभावना	96	24	18.00
57	नन्हा राजकुमार	सैंतेक्जूपेरी	संभावना	90	88	20.00
58	गिनतीलाल की छींक	सरोजिनी प्रीतम	प्रकाशन विभाग	88	54	15.50
59	शापित फल्गु	सुरंजन	प्रकाशन विभाग	92	18	10.00

60	अनकही शौर्य गाथाएं	गोविन्द स्वरुप सिंहल	प्रकाशन विभाग	90	36	11.00
61	दहकता अवध	विलायत जाफरी	प्रकाशन विभाग	90	28	11.50
62	सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता	इकबाल अहमद	प्रकाशन विभाग	93	38	12.00
63	अनारको के आठ दिन	सत्यु	राजकमल	97	104	45.00
64	इन्स्पेक्टर कीमतलाल	रस्किन बांड	मुनीश		110	30.00
65	सोमू की सैर उडनतश्तरी से	मदन वैष्णव	रा. सा. अ	81	54	4.80
66	युग युग की कहानियां	शांता रंगाचारी	नेबुट्र		64	8.50
						1167.30

चुनी हुई किताबे : छोटे जन - पुस्तकालयों को लिए पुस्तक चयन सूची

बाल/किशोर साहित्य

पाठक वर्ग - 8 से 18 साल — **पुस्तक वर्ग - विज्ञान एवं पर्यावरण**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	विज्ञान के मनोरजक खेल	आइवर यूशियल	सीबीटी	98	78	30.00
2	बिजली के करतब	ए. के. चक्रवर्ती, एस. सी. भट्टाचार्य	सीबीटी	97	88	18.00
3	विज्ञान के प्रयोग	कीथ वारेन	भाझा	98	25	5.00
4	विज्ञान हंसते हंसाते - 1	अशोक गुजराती	वाणी	95	24	12.00
5	विज्ञान हंसते हंसाते - 2	अशोक गुजराती	वाणी	97	20	12.00
6	सही आकार	दुलदुल विश्वास	भाझा	97	21	2.50
7	एडिसन की कहानी	श्रीकान्त व्यास	राजपाल	95	40	20.00
8	पानी	केशव सागर	राजपाल	96	32	20.00
9	आवाज	केशव सागर	राजपाल	97	40	15.00

10	जीव आया	देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय	सस्ता	57	36	3.50
11	बेटी करे सवाल	अनु गुप्ता	एकलव्य	97	76	25.00
12	कहानी पृथ्वी की	ऋषि प्रियदर्शी	संभावना	95	32	10.00
13	इतना तो जानिए	आनन्द कुमार	सस्ता	95	55	5.00
14	आओ पहचाने उपयोगी वृक्षों को	रेखा रस्तोगी	सीबीटी	97	56	21.00
15	प्रदूषण	एन. शेषगिरि	नेबुट्र	97	64	8.50
16	कीटो का अनोखा संसार	हरिहर धनौआ मोतीहार	नेबुट्र	97	40	13.50
17	सांप और हम	जय एवं रोम व्हिटेकर	नेबुट्र	95	64	7.50
18	कछुए और मगर	जय एवं रोम व्हिटेकर एवं ईन्द्रनील दास	नेबुट्र	95	64	7.50
19	चिडिया बेचारी कहां रहेगी?	सुधा गुप्ता	संभावना	96	24	10.00
20	शोर	हफीज खान और साथी	संभावना	96	16	10.00
21	भारतीय हरिण	राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह	प्रकाशन विभाग	88	20	7.00
22	कबूतर	रमेश बेदी	प्रकाशन विभाग	92	34	10.00
23	चाय की प्याली में पहेली	पार्थ घोष, दीपांकर होम	नेबुट्र	95	106	27.00
						300.00

चुनी हुई किताबें : छोटे जन - पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

बाल/किशोर साहित्य

पाठक वर्ग - 8 से 18 साल **पुस्तक वर्ग - शौक**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	बूझो तो जानें	आनन्द कुमार	सस्ता	97	48	5.00
2	जो बूझे सो चतुर सुजान	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	96	40	15.00
3	गणित के चुटकुले	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	98	40	18.00
4	दिमागी कसरत	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	98	40	18.00
5	आओ बुद्धि बढायें	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	98	32	18.00
6	उलझे मोती	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	96	40	15.00
7	गणित के जादू	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	98	32	15.00
8	जो बूझे सो बुद्धिमान	ललित नारायण उपाध्याय	प्रभात	99	32	18.00
9	क्रिकेट	विजय मर्चेण्ट	नेबुट्र		64	
10	बूझो तो जानें	पूनम	प्रभात	98	24	15.00

11	कबाड से जुगाड		एकलव्य			15.00
12	खिलौनों का खजाना		एकलव्य			15.00
13	खेल खेल में		एकलव्य			10.00
14	खेल खिलौने		एकलव्य			15.00
15	माचिस की तीली		एकलव्य			5.00
16	वर्ग पहेली		एकलव्य			3.00
17	एक आधार अनेक आकार		एकलव्य			20.00
						220.00

चुनी हुई किताबें : छोटे जन - पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

वयस्क साहित्य - व

पाठक वर्ग - वयस्क **पुस्तक वर्ग - शिक्षा**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	समझ के लिए तैयारी	कीथ वॉरेन	नेबुट्र			16.00
2	तोत्तोचान	तेत्सुको कुरोयागी	नेबुट्र			41.00
3	दिवास्वप्न	गिजुभाई बधेका	नेबुट्र			19.00
4	बच्चे की भाषा और अध्यापक	कृष्ण कुमार	नेबुट्र			24.00
5	राज समाज और शिक्षा	कृष्ण कुमार	राजकमल			50.00
6	अध्यापक के नाम पत्र	बारबियाना स्कूल के बच्चे	ग्रन्थ			
7	अध्यापक	सिल्विया एश्टन-वॉर्नर	ग्रन्थ			150.00
8	माता - पिता के प्रश्न	गिजुभाई बधेका	माटेसोरी			18.00
9	शिक्षक हो तो	गिजुभाई बधेका	माटेसोरी			18.00
10	एक पुस्तक माता पिता के लिए	अन्तोन मकारेन्को	करेन्ट			30.00

11	जीवन की ओर - 1	अन्तोन मकारेन्को	करेन्ट			30.00
12	जीवन की ओर - 2	अन्तोन मकारेन्को	करेन्ट			30.00
13	बाल हृदय की गहराइयां	वसीली सुखोम्लिन्स्की	करेन्ट			30.00
14	शिक्षा शास्त्रीय रचनाएं	लेव तोल्स्तोय	करेन्ट			35.00
15	बालवाडी	जुगतराम दवे	सर्वसेवा			25.00
16	नयी तालीम की ओर	महात्मा गाधी	नवजीवन			
17	शिक्षा	रवीन्द्रनाथ टेगोर	सन्मार्ग			40.00
18	भारत में बच्चे और राजनीति	मायरन वीनर	भा सासं			40.00
19	सीखना सिखाना	एकलव्य	एकलव्य			10.00
20	बच्चे असफल क्यो होते हैं	जॉन होल्ट	एकलव्य			40.00
21	कथा - कहानी शास्त्र	गिजुभाई बधेका	मांटेसोरी			
22	खुलते अक्षर खिलते अंक	विष्णु चिचालकर	नेबुट्र			15.00
23	ब्लैक बोर्ड की किताब		ओरियेन्ट			
24	सुन्दर सलौने भारतीय खिलौने	सुदर्शन खन्ना	नेबुट्र			60.00
						721.00

चुनी हुई किताबें : छोटे जन - पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

वयस्क साहित्य - व

पाठक वर्ग - वयस्क **पुस्तक वर्ग - पर्यावरण**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	सामान्य भारतीय सांप	रोम्युलस व्हीटेकर	नेबुट्र		168	52.00
2	हमारे परिचित पक्षी	सलीम अली, लाइक फतेह अली	नेबुट्र		112	34.00
3	पानी	राम	नेबुट्र		64	8.50
4	प्रदूषण	एन. शेषगिरी	नेबुट्र		64	8.50
5	हमारी धरती	लाइक फतेह अली	नेबुट्र		64	10.00
6	सांप और हम	जाय एव रोम व्हीटेकर	नेबुट्र		64	9.50
7	कछुए और मगर	जाय एवं रोम व्हीटेकर एवं इन्द्रनील दास	नेबुट्र		64	9.50
8	चिपको संदेश	सुन्दरलाल बहुगुणा	सर्वसेवा			10.00

9	पानी और पेड़ों में जीवन	सुन्दरलाल बहुगुणा	सर्वसेवा			4.00
10	पर्यावरण और विकास	सुन्दरलाल बहुगुणा	सर्वसेवा			8.00
11	हिमालय बचाओ	रघुवीर सिह पिरटा	सर्वसेवा			4.00
12	बाढ से त्रस्त सिचाई से ग्रस्त उत्तर बिहार की व्यथा गाथा	डी.के.मिश्र	समता पटना		117	150.00
13	बंदिनी महानन्दा	डी. के. मिश्र	समता पटना		118	125.00
14	जिसने उम्मीद के बीज बोये	ज्या गियोनो	भाज्ञा		22	2.50
15	प्रमुख के नाम पत्र	चीफ सीएथल	भाज्ञा		20	5.00
16	हमारे तालाब	मधु. बी. जोशी	भाज्ञा		18	2.00
17	सुखोमाजरी का संदेश		भाज्ञा		14	2.00
18	आज भी खरे है तालाब	अनुपम मिश्र	गाशप्र	94	120	120.00
19	राजस्थान की रजत बूंदे	अनुपम मिश्र	गाशप्र	95	120	200.00
20	हमारा पर्यावरण	सं. अनिल अग्रवाल, सुनीता नारायण	गाशप्र	88	280	200.00
21	भारत के संकट ग्रस्त वन्य प्राणी	एस. एम. नायर	नेबुट्र		94	26.00
22	हमारे जल साधन	राम			106	9.50
						1000.00

चुनी हुई किताबें : छोटे जन - पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

वयस्क साहित्य - व

पाठक वर्ग - वयस्क **पुस्तक वर्ग - स्वास्थ्य**

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	जहां डाक्टर न हो	डेविड वर्नर	VHI	94	577	175.00
2	स्वास्थ्य और समाज - एक भिन्न स्वर	सी. सत्यमाला निर्मला				100.00
3	प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा में उपयोगी औषधीय वनस्पतियां		LPS			60.00
4	माता व शिशु स्वास्थ्य रक्षा में उपयोगी औषधीय वनस्पतियां		LPS			55.00
5	स्वास्थ्य वर्धक औषधीय वनस्पतियों से स्वयं औषधियां बनाने की विधियां		LPS			60.00

11	आशापूर्ण देवी की श्रेष्ठ कहानियां	आशापूर्ण देवी	नेबुट्र	98	214	50.00
12	इक्कीस बांग्ला कहानियां		नेबुट्र	98	234	32.00
13	एक किशोरी फुलझडी सी	टी.पद्मनाभन्	नेबुट्र	97	96	23.00
14	स्मृति की रेखाएं	महादेवी वर्मा	लोक भारती	93	120	10.50
15	अतीत के चलचित्र	महादेवी वर्मा	लोक भारती	97	104	15.00
16	त्रिशंकु	मन्नू भंडारी	राधाकृष्ण	95	164	30.00
17	मेरी प्रिय कहानियां	भगवतीचरण वर्मा	राजपाल	98	128	30.00
18	तिरछी रेखाएं	हरिशंकर परसाई	वाणी	96	116	25.00
19	और अन्त में	हरिशंकर परसाई	वाणी	96	128	70.00
20	फूलों का कुर्ता	यशपाल	लोकभारती	83	140	30.00
21	दुविधा	विजयदान देथा	सारांश	96	250	75.00
22	आनन्दी बाई और अन्य कहानियां	परशुराम	सा.अकादेमी	93	112	50.00
23	बारह हंगारी कहानियां		सा.अकादेमी	84	200	25.00
24	कन्नड लघु कथाएं		सा.अकादेमी	83	224	25.00
25	कन्नड लोक कथाएं		सा.अकादेमी	91	226	85.00

26	वाइकम मुहम्मद बशीर की प्रतिनिधि कहानियां	वाइकम मुहम्मद बशीर	लोक भारती	93	156	80.00
27	वाड्चू	भीष्म साहनी	राजकमल	96	172	40.00
28	मालती जोशी की कहानियां	मालती जोशी	विकास	98	168	25.00
29	सोने की चिडिया	ओम गोस्वामी	सा. अकादेमी	91	184	50.00
30	चांदनी रात का दुखांत	कर्तार सिह दुग्गल	सा. अकादेमी	98	224	75.00
31	पृथ्वी की पीडा	जोगेश दास	सा. अकादेमी	96	224	65.00
32	आंधी और अन्य कहानियां	पी. पद्मराजु	सा. अकादेमी	93	140	65.00
33	ग्यारह तुर्की कहानिया		सा. अकादेमी	91	156	25.00
34	कामरेड का कोट	संजय	राधाकृष्ण	93	156	60.00
35	केशर कस्तूरी	शिवमूर्ती	राधाकृष्ण	94	164	60.00
36	सात युगोस्लाव कहानियां		राधाकृष्ण	83	52	10.00
						1394.50

चुनी हुई किताबें : छोटे जन - पुस्तकालयों के लिए चयन सूची

वयस्क साहित्य - व

पाठक वर्ग - वयस्क

पुस्तक वर्ग - उपन्यास

क्रम संख्या	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष	पृष्ट	मूल्य
1	आधा गाव	राही मासूम रजा	राजकमल	98	356	50.00
2	ओस की बूंद	राही मासूम रजा	राजकमल	97	114	20.00
3	परती परिकथा	फणीश्वरनाथ रेणु	राजकमल	95	394	55.00
4	मैला आंचल	फणीश्वरनाथ रेणु	राजकमल			45.00
5	तितली	जयशंकर प्रसाद	राजकमल	97	242	30.00
6	कंकाल	जयशंकर प्रसाद	राजकमल	93	200	35.00
7	सामर्थ्य और सीमा	भगवती चरण वर्मा	राजकमल	96	253	45.00
8	रेखा	भगवती चरण वर्मा	राजकमल	97	278	40.00
9	आनंदमठ	बंकिम चट्टोपाध्याय	राजकमल	97	188	35.00
10	कुसुमकुमारी	देवकीनन्दन खत्री	राजकमल	95	144	18.00
11	कुरु कुरु स्वाहा	मनोहरश्याम जोशी	राजकमल	98	216	35.00
12	उमरावनगर में कुछ दिन	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल	93	80	18.00
13	मीनाबाजार	सआदत हसन मण्टो	राजकमल	97	124	20.00
14	अनारो	मंजुल भगत	राजकमल	·96	102	20.00
15	गंजी	मंजुल भगत	राजकमल	95	114	25.00
16	मित्रो मरजानी	कृष्णा सोबती	राजकमल	97	96	20.00
17	तमस	भीष्म साहनी	राजकमल	99	260	40.00
18	कड़िया	भीष्म साहनी	राजकमल	98	168	35.00
19	अछूत	दया पवार	राधाकृष्ण	98	242	45.00
20	श्री श्री गणेश महिमा	महाश्वेता देवी	राधाकृष्ण	98	176	35.00
21	1084 वे की मां	महाश्वेता देवी	राधाकृष्ण			40.00
22	जंगल के दावेदार	महाश्वेता देवी	राधाकृष्ण			45.00
23	चोट्टि मुण्डा और उसका तीर	महाश्वेता देवी	राधाकृष्ण			45.00
24	छाको की वापसी	बदीउज्जमां	राजकमल			30.00

25	एक सूरमा की मौत	मुल्कराज आनंद	सारांश	96	108	35.00
26	पातुम्मा की बकरी और बाल्यकाल सखी	वैकम मुहम्मद बशीर	नेबुट्र	90	116	11.00
27	एक थी अनीता	अमृता प्रीतम	हिन्द	96	144	75.00
28	एक थी सारा	अमृता प्रीतम	हिन्द	97	192	75.00
29	ब्रह्मपुत्र के आसपास	लील बहादुर क्षेत्री	सा.अकादेमी	96	178	60.00
30	यायावर	सैयद अब्दुल मलिक	सा.अकादेमी	92	128	60.00
31	पराया	लक्ष्मण माने	सा.अकादेमी	97	124	75.00
32	कानूरु हेग्गडिति	कुवेम्पु	सा.अकादेमी	81	518	40.00
33	आरोग्य निकेतन	ताराशंकर बंदोपाध्याय	सा.अकादेमी	97	428	85.00
34	पड़ोसी	पी. केशवदेव	सा.अकादेमी	96	388	80.00
35	महाभोज	मन्नू भण्डारी	राधाकृष्ण	97	160	18.00
36	छोरा कोल्हाटी का	किशोर शांताबाई काले	राधाकृष्ण	97	160	95.00
37	संस्कार	यू. आर. अनन्तमूर्ती	राधाकृष्ण	97	172	60.00
38	बस्ती	इंतजार हुसैन	राधाकृष्ण	97	234	125.00

39	माहिम की खाड़ी	मधु मंगेश कर्णिक	राधाकृष्ण	93	116	26.00
40	रानी नागफनी की कहानी	हरिशंकर परसाई	वाणी	97	122	60.00
41	कन्यादान	हरिमोहन झा	वाणी	93	96	40.00
42	टोपी शुक्ला	राही मासूम रजा	राजकमल	95	162	60.00
43	बिल्लेसुर बकरिहा	निराला	राजकमल	96	72	40.00
44	शहतीर	ए. पी. मोहम्मद	अभिव्यंजना	97	100	65.00
45	आवाजें और दीवारें	वैकम मुहम्मद बशीर	लोक भारती	89	102	20.00
46	अलग अलग वैतरणी	शिवप्रसाद सिंह	लोक भारती	97	276	27.00
47	जलसाघर	ताराशंकर बंदोपाध्याय	ज्ञान पीठ	92	252	50.00
48	बकुल कथा	आशापूर्ण देवी	ज्ञान पीठ	94	412	130.00
49	सुवर्णलता	आशापूर्ण देवी	ज्ञान पीठ	94	464	160.00
50	दो सेर धान	तकषी शिवशंकर पिल्लै	सा. अकादेमी	95	120	40.00
51	एक कावेरी सी	त्रिपुरसुन्दरी लक्ष्मी	सा. अकादेमी	93	188	80.00
52	अब न बसौं इह गांव	कर्त्तार सिंह दुग्गल	सा. अकादेमी	96	420	200.00

53	कथा एक प्रान्तर की	एस. के. पोट्टेकर	ज्ञानपीठ	81	506	50.00
54	मृत्युंजय	बीरेन्द्रकुमार भट्टचार्य	ज्ञानपीठ	93	274	85.00
55	हँसली बाक की उपकथा	ताराशंकर बंदोपाध्याय	ज्ञानपीठ	91	376	85.00
56	मुकज्जी	शिवराम कारंत	ज्ञानपीठ	92	224	60.00
57	निशान्त के सहयात्री	कुर्रतुल - ऐन हैदर	ज्ञानपीठ	94	344	95.00
58	डूब	वीरेन्द्र जैन	वाणी	98	288	125.00
59	कब तक पुकारुं	रांगेय राघव	राजपाल			150.00
60	अल्प जीवी	रा. विश्वनाथ शास्त्री	सा.अकादेमी	83	138	15.00
61	पाताल भैरवी	लक्ष्मीनन्दन बोरा	सा.अकादेमी	96	266	100.00
62	पाचवा पहर	गुरदयाल सिंह	राजकमल	97	168	125.00
63	नरक कुंड में बास	जगदीश चन्द्र	राजकमल	98	312	175.00
64	अनुभव	हेमांगिनी अ. रानाडे	राजकमल	96	166	95.00
65	दास्तान - ए - लापता	मंजूल एहतेशाम	राजकमल	95	246	150.00

66	राग दरबारी	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल			
67	दिवास्वप्न	गिजुभाई बधेका	नेबुट्र	98	86	19.00
68	तोत्तोचान	तेत्सुका कुरोयांगी	नेबुट्र			41.00
69	अपना मोर्चा	काशीनाथ सिंह	राजकमल			
						4088.00

4 प्रकाशकवार चयनित पुस्तकों की सूचियां

सिर्फ शिशु, बाल व किशोर साहित्य

4.1 सूचियां एक नजर में

क्रम संख्या	प्रकाशक	किताबों की संख्या	कुल दाम रुपये
1	नेशनल बुक ट्रस्ट	62	684.00
2	चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट	32	687.00
3	प्रकाशन विभाग	26	353.50
4	संभावना प्रकाशन	33	468.00
5	साहित्य अकादमी	17	510.00
6	एकलव्य	11	119.00
7	हेमकुण्ट प्रेस	10	259.00
8	रत्न सागर	6	138.00
9	सहमत	1	25.00
10	हंस प्रकाशन	2	35.00
11	मेधा बुक्स	2	50.00
12	कथा	12	180.00
		214	3508.50

4.2 प्रकाशकवार सूचियां

नेशनल बुक ट्रस्ट (नेबुट्र),
ए-5 , ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली -110 016.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	घर और घर	6.50
2	छोटी चींटी काम बडा	6.50
3	आम की कहानी	6.00
4	कौवे की कहानी	6.50
5	हाथी और कुत्ता	7.00
6	मेंढक और सांप	8.00
7	गुब्बारा	6.50
8	रेलगाडी करे छुक छुक	6.50
9	चिडियाघर की सैर	6.50
10	इनकी दुनिया	6.00
11	आधे गोल चक्कर	6.00
12	पशु पक्षी का नाम बताएं	6.50
13	खोजो पहचानो	6.00
14	चंदा मामा	
15	टिलटिल का साहस	6.00
16	रुपा हाथी	
17	नन्हा करमकल्ला	10.00
18	14 चूहे घर बनाने चले	11.00
19	फूल और मैं	8.00

20	पानी ही पानी	6.50
21	टिड्डे उडो आकाश में	16.00
22	बस की सैर	10.00
23	छुपा रुस्तम	10.00
24	मोरा	11.00
25	गुलाबो चुहिया और गुब्बारे	
26	जंगल में एक तालाब	9.50
27	सब का साथी सब का दोस्त	9.00
28	बरसात कब होगी?	8.50
29	नटखट लडकी मामू	8.00
30	छोटे पौधे : बडे पौधे	10.00
31	मत्स्या	9.50
32	दुमदार कहानी	10.00
33	मुत्थू के सपने	9.50
34	पगला आम	10.00
35	महके सारी गली गली	12.00
36	लाल पतंग	8.00
37	संकट सांप का	7.00
38	लालची बछिया गुलाबो	13.50
39	जब दरियाई हाथी भी झबरा था	84.00
40	जब शेर भी उडान भरता था	75.00
41	स्वामी और उसके दोस्त	23.50
42	तेरह अनुपम कहानियां	34.00
43	चमकदार गुफा	10.00
44	सफेद घोडा	10.00

45	राजा जो कंचे खेलता था	10.00
46	हिमालय की चोटी पर	6.00
47	राम कथा	10.00
48	हमारा नाटक	12.00
49	वीरों की कहानियां	8.50
50	महाभारत	8.00
51	पुस्तकें जो अमर हैं	
52	पांच कहानियां	
53	अमर ज्योति	
54	मेरी चुंबकीय उत्तरी ध्रुव यात्रा	
55	आधुनिक एशियाई कहानियां	23.00
56	युग-युग की कहानियां	8.50
57	प्रदूषण	8.50
58	कीटों का अनोखा संसार	13.50
59	सांप और हम	7.50
60	कछुए और मगर	7.50
61	चाय की प्याली में पहेली	27.00
62	क्रिकेट	
		684.00

2 चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट (सीबीटी),
4, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली - 110 002.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	नन्हें मुन्ने गीत	18.00
2	महागिरी	12.00
3	बुढिया की रोटी	15.00
4	खरगोश की चालाकी	14.00
5	समझ का फेर	
6	पंचतन्त्र की कहानियां - 1	25.00
7	पंचतन्त्र की कहानियां -2	25.00
8	पंचतन्त्र की कहानियां - 3	25.00
9	पंचतन्त्र की कहानियां - 4	25.00
10	चुटर पुटर की छलांग	25.00
11	पौराणिक कहानियां - 1	25.00
12	पौराणिक कहानियां - 2	25.00
13	पौराणिक कहानियां - 3	25.00
14	अम्मा सबकी प्यारी अम्मा	
15	भारत की लोक कथा निधि - 1	37.00
16	भारत की लोक कथा निधि - 2	37.00
17	गुड्डी	27.00
18	चुमकी ने चिट्ठी डाली	15.00
19	लौट के बुद्धू घर को आये	18.00
20	पेटी गठबंधन	18.00
21	बच्चों की कहानियां	25.00
22	अम्मा का परिवार	25.00
23	कुछ और कहानियां	25.00
24	नई कहानियां	25.00
25	बीस और कहानियां	26.00
26	हमीरपुर के खण्डहर	16.00
27	विज्ञान के मनोरंजक खेल	30.00
28	बिजली के करतब	18.00
29	आओ पहचानो उपयोगी वृक्षों को	21.00
30	ननिहाल में गुजरे दिन	21.00
31	मुर्खों का स्वर्ग	12.00
32	कुछ भारतीय पक्षी	32.00
		687.00

3 प्रकाशन विभाग,
सूचना व प्रसारण मंत्रालय,
पटियाला हाउस,
नई दिल्ली - 110 001.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	छत्तीसगढ की लोक कथाएं	11.00
2	रऊफ चाचा का गदहा	
3	आगरा में अकबर	12.00
4	भारत की लोक कथाएं	17.00
5	आसमान की मेज	15.00
6	तेलुगू लोक कथाएं - II	10.00
7	और पेड गुंगे हो गए	15.00
8	दो सिर वाला दैत्य	12.50
9	तुम्हें गुस्सा आ रहा है	15.00
10	सब्बू सटपट	18.00
11	जंगल में मोर नाचा	12.00
12	कार्बन कापियों की करामत	11.00
13	आजा होजा	9.00
14	पिंकू के कारनामें	32.00
15	बिहार की लोक कथाएं	22.00
16	काश्मीर की लोक कथाएं	17.50
17	कौरवी लोक कथाएं	21.00
18	एक खंभा सभागृह	16.00
19	बस पांच मिनट	10.50
20	गिनतीलाल की छींक	15.50
21	शापित फल्गु	10.00
22	अनकही शौर्य गाथाएं	11.00
23	दहकता अवध	11.50
24	सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता	12.00
25	भारतीय हरिण	7.00
26	कबूतर	10.00
		353.50

4 संभावना प्रकाशन,
रेवती कुंज,
हापुड - 245 101.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	चिडिया	10.00
2	चिरिका और बिल्ला	10.00
3	गुठली	10.00
4	पिंजरे में तोता	10.00
5	आसमान भी दंग	10.00
6	अनोखा चोर	10.00
7	नटखट पिल्ला	18.00
8	आज नहीं पढूंगा	15.00
9	गोपी गवैया बाघा बजैया	15.00
10	किस्सा हतिमताई	15.00
11	किस्सा तोता - मैना	15.00
12	हितोपदेश	18.00
13	कथा सरित सागर	18.00
14	यदि होता किन्नर नरेश मैं	25.00
15	ईद का त्यौहार	12.00
16	मंदिर	12.00
17	सबसे बडा तीर्थ	10.00
18	कफन	15.00
19	छुट्टी	10.00
20	घडियों की हडताल	15.00
21	ह य व र ल	12.00
22	अगडम - बगडम	10.00
23	आल्हा ऊदल	15.00
24	वासवदत्ता	18.00
25	मुद्राराक्षस	18.00
26	अर्थशास्त्र	18.00
27	मेघदूत	18.00
28	शकुन्तला	18.00
29	मिट्टी की गाडी	18.00
30	नन्हा राजकुमार	20.00
31	कहानी पृथ्वी की	10.00
32	चिडिया बेचारी कहां रहेगी?	10.00
33	शोर	10.00
		468.00

7 हेमकुण्ट प्रेस,

ए - 78, नरेना इंडस्ट्रीयल एरिया फेज - 1,

नई दिल्ली - 110 028.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	शिशु गीत	20.00
2	नन्हें मीत	25.00
3	टमक टुम	25.00
4	चूँ चूँ	28.00
5	बूजो	25.00
6	सुनहरे सपने	25.00
7	चांदनी रातें	25.00
8	इंद्रधनुष	30.00
9	बिखरे फूल	28.00
10	आकाश दीप	28.00
		259.00

8 रत्न सागर,

विराट भवन, मुखर्जी नगर कमर्शियल काम्प्लेक्स,

दिल्ली - 110 009.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	लालू और पीलू	10.00
2	मीनू और पुसी	10.00
3	हीरा	14.00
4	घेरा	16.00
5	झरोखा - 1	40.00
6	झरोखा - 2	48.00
		138.00

9 सहमत,

8.वी .बी. पी हाउस,

नई दिल्ली - 110 001.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	दुनिया सबकी	25.00

10 हंस प्रकाशन,
18, न्याय मार्ग,
इलाहाबाद.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	चाचा छक्कन	20.00
2	जंगल की कहानियां	15.00
		35.00

11 मेधा बुक्स,
एक्स - 11, नवीन शाहदरा,
दिल्ली - 110 032.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	दादाजी का चिडियाघर	25.00
2	मुँहपटक और धरपटक	25.00
		50.00

12 कथा,
ए - 3 सर्वोदय एन्क्लेव,
नई दिल्ली - 110 017.

क्रम संख्या	पुस्तक	दर
1	पारो की कहानी	15.00
2	स्त्री का पत्र	15.00
3	दो हाथ	15.00
4	अर्जुन	15.00
5	पंच परमेश्वर	15.00
6	पुरस्कार	15.00
7	फैसला	15.00
8	थकावट	15.00
9	भोला	15.00
10	अभिशाप	15.00
11	स्पर्श	15.00
12	समुद्र तट पर	15.00
		180.00

5. प्रकाशकों के पते

1. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (नेबुट्र)
   ए-5 ग्रीन पार्क,
   नई दिल्ली - 110 016.

2. चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट (सीबीटी),
   4, बहादुरशाह जफर मार्ग,
   नई दिल्ली - 110 002.

3. प्रकाशन विभाग (प्रकाशन विभाग),
   सूचना व प्रसार मंत्रालय,
   पटियाला हाउस,
   नई दिल्ली - 110 001.

4. एन. सी. ई. आर. टी. (NCERT),
   श्री अरविन्द मार्ग,
   नई दिल्ली - 110 016.

5. साहित्य अकादमी (सा. अकादमी),
   'स्वाति', मंदिर मार्ग,
   नयी दिल्ली - 110 001.

6. कथा,
   ए - 3, सर्वोदय एन्क्लेव,
   नई दिल्ली - 110 017.

7. विज्ञान प्रसार,
   C-24, कुतुब इंस्टिट्यूशनल एरिया,
   नई दिल्ली - 110 016.

8. निरन्तर,
   बी - 64, सर्वोदय एन्कलेव,
   नई दिल्ली - 110 017.

9. करेन्ट बुक डिपो (करेन्ट),
   18/53, माल रोड,
   कानपुर - 208001.

10. भारत ज्ञान विज्ञान समिति,
    वेस्ट ब्लॉक 2, विंग - 6,
    आर.के.पुरम, सेक्टर - 1,
    नई दिल्ली - 110 066.

11. संभावना प्रकाशन (संभावना),
    रेवती कुंज,
    हापुड - 245 101.

12. सस्ता साहित्य मण्डल (सस्ता),
    एन्-77, कनॉट सर्कस,
    नई दिल्ली - 110 001.

13. सहमत,
    8, वी. बी. पी हाउस,
    नई दिल्ली - 110 001.

14. राजकमल प्रकाशन (राजकमल),
    1- बी, नेताजी सुभाष मार्ग,
    नई दिल्ली - 110 002.

15. राधाकृष्ण प्रकाशन (राधाकृष्ण),
    2/38 अंसारी मार्ग,
    दरियागंज,
    नई दिल्ली - 110 002.

16. वाणी प्रकाशन (वाणी),
    21- ए, दरियागंज,
    नयी दिल्ली - 110 002.

17. राजपाल एंड सन्स् (राजपाल),
    मदरसा रोड,
    कश्मीरी गेट,
    दिल्ली - 110 006.

18. प्रभात प्रकाशन,
    4/19, आसफ अली रोड,
    नई दिल्ली - 110 002.

19. हेमकुण्ट प्रेस (हेमकुण्ट),
    A-78, नरेना इंडस्ट्रियल एरिया,
    फेज - 1,
    नई दिल्ली - 110 028.

20. रत्न सागर (रत्न),
    विराट भवन, मुखर्जीनगर,
    कमर्शियल कॉम्प्लेक्स,
    दिल्ली - 110 009.

21. आधार प्रकाशन,
    S. C. R. 267, सेक्टर - 16,
    पंचकूला - 134 113,
    हरियाणा.

22. आत्माराम एण्ड सन्ज,
    कश्मीरी गेट,
    दिल्ली - 110 006.

23. मेधा बुक्स (मेधा),
    एक्स - 11, नवीन शाहदरा,
    दिल्ली - 110 032.

24. हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स,
    सी - 21/30, पिशाचमोचन,
    वाराणसी - 221 001.

25. दिल्ली बुक कंपनी,
    एस-12, कनाट सरकस,
    नई दिल्ली - 110 001.

26. स्कॉलास्टिक,
    29, उद्योग विहार, फेस-1,
    गुडगांव - 122 016.